بسم الله الرحمن الرحيم

لا إله إلا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 24
Issue - 11

राह-ए-ईमान

नवम्बर
2022 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

संपादक - मंडल
फज़ल नासिर

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी........ 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ)........4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 21.10.2022)........8
7. क़ुरआन की विशेषताएं (क़िस्त-1)........12
8. आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ुदा से मुहब्बत और ख़ुदा से भय....21
9. एक ग़ज़ल........23
10. वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है (5)........24
11. सिलसिला अहमदिया (अर्थात अहमदियत का परिचय)........26
12. सामान्य ज्ञान........28
13. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.........32

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

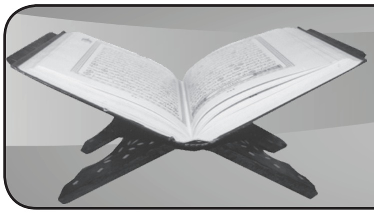

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا تُوۡبُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ تَوۡبَةً نَّصُوۡحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمۡ اَنۡ يُّكَفِّرَ عَنۡكُمۡ سَيِّاٰتِكُمۡ
وَيُدۡخِلَكُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ۙ يَوۡمَ لَا يُخۡزِى اللّٰهُ النَّبِىَّ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ ۚ نُوۡرُهُمۡ
يَسۡعٰى بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَبِاَيۡمَانِهِمۡ يَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَاۤ اَتۡمِمۡ لَنَا نُوۡرَنَا وَاغۡفِرۡ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۟

उपरोक्त आयत का अनुवाद: "हे ईमान वालो! निष्ठापूर्वक पश्चाताप करते हुए अल्लाह की ओर झुको। दूर नहीं है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाहों को तुमसे दूर कर दे और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल कर दे, जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं, उस दिन जब अल्लाह नबी और उनके साथ ईमान लाने वालों का अपमान नहीं करेगा। उसका प्रकाश उसके आगे और दाहिनी ओर तेजी से जाएगा। वे कहेंगे हे हमारे रब हमारे लिए हमारे नूर को पूर्ण कर दे और हमें क्षमा कर दे। निस्संदेह तू हर चीज़ पर जिसे तू चाहे शाश्वत क़ुदरत रखता है। (सूर: तहरीम : 66/9)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने रब्ब की ओर से हमें यह बात बताई कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: मेरा बन्दा गुनाह करता है और फिर दुआ माँगता है कि हे अल्लाह तआला! मेरे गुनाह माफ कर दे। इस पर अल्लाह तआला फ़रमाता है: मेरे बन्दे ने बुद्धि हीनता से गुनाह तो किए लेकिन वह जानता है कि मेरा एक ख़ुदा है जो गुनाह माफ कर देता है और चाहे तो पकड़ ले, तो मेरा बंदा तौबा को तोड़ देता है और गुनाह करने लग जाता है और फिर लज्जित होकर कहता है: हे मेरे रब्ब मेरे गुनाह बख्श दे। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने गुनाह किया, लेकिन वह जानता है कि उस का एक ख़ुदा है वह गुनाहों को माफ भी करता है और गिरफ्त भी करता है फिर बंदा तौबा तोड़ देता है और गुनाह करता है लेकिन लज्जित होकर दुआ माँगता है कि हे मेरे ख़ुदा! मेरे गुनाह बख्श। अल्लाह तआला कहता है कि मेरा बंदा जो जानता है कि मेरा एक ख़ुदा है जो गुनाह क्षमा करता है और कभी पकड़ भी करता है (मेरा बन्दा कमज़ोर है अपने आप पर क़ाबू नहीं रख सकता ग़लती कर बैठता है लेकिन अगर वह लज्जित होकर तौबा करे तो मैं उसे बख्श दूँगा और अगले गुनाहों से उसे बचाऊँगा। वह मेरी इच्छा के अनुसार ही काम करेगा। (मुस्लिम किताबुत्तौबा)

☆ ☆ ☆

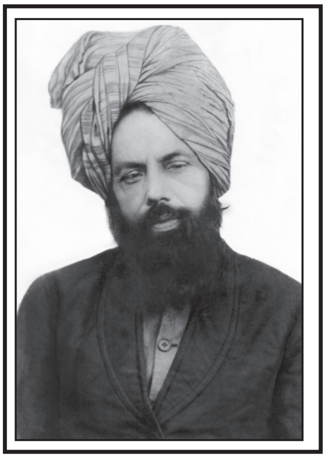

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

इस्लाम फ़ितरत का मज़हब है

इस्लाम क्या है? इस्लाम का तो नाम ही अल्लाह तआला ने "फितरतुल्लाह" रखा है। फ़ितरत का मज़हब तो इस्लाम ही है। मगर इन बातों की वास्तविकता तब खुलती है जब इंसान सब्र और साबित क़दमी से किसी पवित्रात्मा की संगति में रहे। साबितक़दमी में बड़ी बरकतें होती हैं। शहद की मक्खी को देखो कि जब वह साबित क़दमी और मेहनत के साथ अपने काम में लगती है तो शहद जैसी उत्तम और फायदेमंद चीज़ तैयार कर लेती है। इसी तरह जो ख़ुदा की तलाश में साबित क़दमी से लगता है तो वह उसको पा लेता है। और न केवल पा लेता है बल्कि मेरा तो विश्वास है कि वह उसको देख लेता है। सांसारिक ज्ञानों को प्राप्त करने में कितना समय और रुपया बहाना पड़ता है। यह विद्याएं, रूहानी (अध्यात्म) ज्ञान की प्राप्ति के नियमों को साफ़ तौर पर बतला रही हैं। हमारा मज़हब जो रूहानी ज्ञानों को प्रारंभिक तौर पर पाने के लिए होना चाहिए वह यह है कि वह पहले ख़ुदा की हस्ती, फिर उसकी विशेषताओं के बारे में जानकारी पैदा करे और ऐसी जानकारी हासिल करे जो यक़ीन के स्तर तक पहुंच जावे। तब अल्लाह तआला के अस्तित्व और उसके व्यापक विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त होगा। और उसकी रूह अंदर से बोल उठेगी कि उसने पूरी तसल्ली के साथ ख़ुदा को पा लिया है। जब अल्लाह तआला के अस्तित्व पर ऐसा ईमान पैदा हो जावे कि वह विश्वास से महान स्तर तक पहुंच जाए और इंसान महसूस कर ले कि उसने मानो ख़ुदा को देख लिया है। और उसकी विशेषताओं को जान ले तो गुनाह से नफ़रत पैदा हो जाती है। और स्वभाव जो पहले पाप की ओर झुकता था अब उधर से हटता और नफ़रत करता है और यही तौबा है।

और यह बात कि अल्लाह तआला पर पूर्णत: विश्वास के बाद आदत गुनाह से नफ़रत करने लगती है। यह बात बड़ी सफ़ाई और आसानी से समझ में आ सकती है। देखो संखिया है, या दूसरे विष हैं या कई ज़हरीले जानवर हैं। इंसान उनसे क्यों डरता है? केवल इसलिए कि तजुर्बा ने बता दिया है किस स्तर पर इस विष से मनुष्य मर जाता है। बहुतों को ज़हर खाकर मरते हुए देखा है। इसीलिए तबीयत उस तरफ़ नहीं जा सकती बल्कि डरती है। जब यह बात है तो फिर क्या कारण है कि भांति-भांति के गुनाह होते हैं। यहां तक कि अगर रास्ते में एक पैसा पड़ा हो तो झुक कर उसको उठा लेगा। हालांकि थोड़े से ऐलान से मालूम हो सकता है कि वह पैसा किसका है। मैंने देखा है कि बारह-बारह आना पर निर्दोष बच्चों के प्राण ले लिए जाते हैं। अदालतों में जाकर देखो कितना भयानक और भ्रष्ट नज़ारा सामने आएगा। थोड़ी-थोड़ी बात पर झूठ बोला जाता है। दुराचार का एक दरिया बह रहा है। यह क्यों? केवल इसलिए कि ख़ुदा पर ईमान नहीं है। सांपों और विषैली चीज़ों से डरते हैं क्योंकि उनको घातक मानते हैं और उनके घातक होने पर विश्वास है। यदि इस तरह अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास हो तो मैं नहीं समझ सकता कि क्यों गुनाह से नफ़रत पैदा न हो। (मलफ़ूज़ात जिल्द- 2)

रूहानी ख़ज़ायन

पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

अत: तुम क्यों उस दया के निशान को छोड़कर जो हमेशा का जीवन प्रदान करता है अज़ाब और मौत का निशान मांगते हो? फिर इसके बाद फ़रमाया की यह क़ौम तो जल्दी से अज़ाब ही मांगती है। दया के निशानों से लाभ उठाना नहीं चाहती। उनको कह दे कि यदि यह बात न होती कि अज़ाब की निशानियाँ समय से सम्बद्ध होती हैं तो यह अज़ाब की निशानियाँ भी कब की उतर गई होतीं और अज़ाब अवश्य आएगा और ऐसे समय में आएगा कि उनको ख़बर भी नहीं होगी।

अब इंसाफ से देखो! कि इस आयत में चमत्कारों का कहाँ इन्कार पाया जाता है। ये आयतें तो बुलन्द आवाज़ में पुकार रही हैं कि काफ़िरों ने मौत और अज़ाब का निशान माँगा था अत: प्रथम उन्हें कहा गया कि देखो तम्हें जीवनदायिनी निशान मौजूद है अर्थात् क़ुर्आन जो तुम पर आकर तुम्हें मारना नहीं चाहता अपितु हमेशा का जीवन प्रदान करता है परन्तु जब अज़ाब का निशान तुम पर आया तो वह तुम्हें मार देगा। तो क्यों तुम अकारण अपना मरना ही चाहते हो और यदि तुम अज़ाब ही मांगते हो तो याद रखो कि वह भी जल्द आएगा। अत: अल्लाह तआला ने आयतों में अज़ाब का वादा दिया है और पवित्र क़ुर्आन में जो दया के निशान हैं और दिलों पर आकर अपना विलक्षण प्रभाव उन पर प्रकट करते हैं उनकी ओर ध्यान दिलाया परन्तु ऐतराज़कर्ता का यह गुमान कि इस आयत में **ला नाफ़िअ:** चमत्कारों की प्रजाति की नफ़ी को बताता है जिस से समस्त चमत्कारों का नकारना अनिवार्य ठहरता है, केवल सर्फ-व-नहव (व्याकरण) से अपरिचित होने के कारण है। याद रखना चाहिए कि नफ़ी का प्रभाव उसी सीमा तक सीमित होता है जो कलाम करने वाले के इरादे में निर्धारित होता है। चाहे वह इरादा स्पष्ट तौर पर वर्णन किया गया हो या संकेत के तौर पर। उदाहरणतया कोई कहे कि अब सर्दी का नाम-व-निशान शेष नहीं रहा तो स्पष्ट है कि उसने अपने शहर की वर्तमान हालत के अनुसार कहा है और यद्यपि उस ने प्रत्यक्ष तौर पर अपने शहर का नाम भी नहीं लिया परन्तु उस के कलाम से यह समझना कि उसका यह दावा है कि समस्त पर्वतीय देशों से भी सर्दी चली गई और हर स्थान पर सख्त और तीव्र धूप पड़ने लगी और उसका तर्क यह प्रस्तुत करना कि जिस **ला** को उसने इस्तेमाल किया है वह प्रजाति की नफ़ी का **ला** है जिसका प्रभाव समस्त संसार पर पड़ना चाहिए, सही नहीं। मक्का के पराजित मूर्ति पूजक जिन्होंने अन्त में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबुव्वत और आपके चमत्कारों को चमत्कार मान लिया तथा जो कुफ्र के युग में भी केवल ख़ुश्क इनकारी नहीं थे अपितु रोम और ईरान में भी जाकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को **आश्चर्यजनक** विचार से जादूगर प्रसिद्ध करते थे और यद्यपि अनुचित शैलियों में ही सही परन्तु निशानों का इक़रार कर लिया करते थे जिनके इक़रार पवित्र क़ुर्आन में मौजूद हैं वे अपने

कमज़ोर कलाम में जो मुहम्मदी नुबुव्वत के चमकदार प्रकाशों के नीचे दबे हुए थे क्यों **ला** नफ़ी (निषेध) का इस्तेमाल करने लगे। अगर उनको ऐसा ही लम्बा छोड़ा इन्कार होता तो वे अन्ततः अत्यन्त श्रेणी के विश्वास से जो उन्होंने अपने रक्तों के बहाने और अपनी जानों के न्योछावर करने से सिद्ध कर दिया था इस्लाम से सम्मानित क्यों हो जाते थे? और कुफ्र के दिनों में उनके वाक्य पवित्र क़ुर्आन में बार-बार दर्ज हैं वह यही है कि वे अपनी अनुदारता के धोखे से सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम **जादूगर** रखते थे जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَاِنۡ یَّرَوۡا اٰیَۃً یُّعۡرِضُوۡا وَ یَقُوۡلُوۡا سِحۡرٌ مُّسۡتَمِرٌّ ۝

(अलक़मर - 3)

अर्थात् जब कोई निशान देखते हैं तो मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह पक्का जादू है फिर दूसरे स्थान पर फ़रमाता है :

وَ عَجِبُوۡۤا اَنۡ جَآءَہُمۡ مُّنۡذِرٌ مِّنۡہُمۡ ۫ وَ قَالَ الۡکٰفِرُوۡنَ ہٰذَا سٰحِرٌ کَذَّابٌ ۝

(साद - 5)

अर्थात् उन्होंने इस बात से आश्चर्य किया कि उन्हीं में से एक व्यक्ति उनकी ओर भेजा गया और बेईमानों ने कहा कि यह तो जादूगर झूठा है। अब स्पष्ट है कि जब वे निशानों को देख कर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जादूगर कहते थे और फिर इसके बाद उन्हीं निशानों को चमत्कार कर के मान भी लिया और प्रायद्वीप का प्रायद्वीप मुसलमान हो कर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र चमत्कारों का हमेशा के लिए सच्चे दिल से गवाह बन गया तो फिर ऐसे लोगों से क्योंकर संभव है कि वे सामान्य तौर पर निशानों से साफ़ इनकारी हो जाते और चमत्कारों के इन्कार में **ला** निषेध इस्तेमाल करते जो उनके हौसले की सीमा से बाहर और उनकी निरंतर राय से दूर था अपितु प्रसंगों से सूर्य के समान स्पष्ट है कि जिस-जिस स्थान पर पवित्र क़ुर्आन ने कफ़िरों की ओर से यह ऐतराज़ लिखा गया है कि क्यों इस पैग़म्बर पर कोई निशानी नहीं उतरी? साथ ही यह भी बतला दिया गया है कि उनका मतलब यह है कि जो निशानियाँ हम मांगते हैं उनमें से कोई निशानी क्यों नहीं उतरती।"

अब संक्षिप्त किस्सा यह कि आप ने उपरोक्त आयत के **ला** निषेध को प्रस्न्दों की सीमा से अधिक खींच दिया है ऐसा **ला** निषेध अरबों के कभी स्वप्न में भी नहीं आया होगा। उनके दिल तो इस्लाम की सच्चाई से भरे हुए थे तब ही तो सब के सब कुछ के अतिरिक्त कि जो उस अज़ाब को पहुँच गए थे जिसका उन को वादा दिया गया था अन्त में इस्लाम से सम्मानित हो गए थे और याद रहे कि ऐसा ला निषेध हज़रत मसीह के कलाम में भी पाया जाता है और वह यह है। फ़रीसीसों ने मसीह से निशान मांगे उसने आह खींचकर कहा कि इस युग के लोग क्यों निशान चाहते हैं मैं तुम से सच कहता हूँ इस युग के लोगों को कोई निशान नहीं दिया जायेगा देखो मरक़स अध्याय 8,11

(एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब, पृष्ठ 14-20)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

इत्मामे हुज्जत

(समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करना)

प्रिय पाठको ! मानवजाति के सुधार के लिए समय समय पर संसार में ईश्वर की ओर से नबी, रसूल, अवतार आते रहे हैं और उन्होंने यथासंभव इस काम को किया। इस युग में भी जब कि संसार में पाप बहुत बढ़ गए और धर्म कि ग्लानि हुई और जो धर्म का वास्तविक उद्देश्य था अर्थात एक ईश्वर की उपासना, अध्यात्मज्ञान द्वारा उसकी सही पहचान, शान्ति, सुरक्षा, आपसी सौहार्द और प्रेम, एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान इत्यादि समाप्त हो गया तो अल्लाह तआला की ओर से धर्म संस्थापनार्थाय हज़रत हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी को सुधारक बना कर भेजा गया है। आपने अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में इस कर्तव्य का भली भांति निर्वहन किया और समाज के हर वर्ग को खुदा से मिलाने और मनुष्य को मनुष्य से मिलाने का प्रयत्न किया। आज आपके मानने वाले संसार भर में फैल चुके हैं और आपके सिद्धांतों पर चल रहे हैं। आप ने अपने जीवनकाल में 80 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हर वर्ग तथा हर धर्म के लोगों को सन्मार्ग की ओर बुलाया और उनका सही मार्गदर्शन किया। आप अपनी एक पुस्तक "अरबईन" में लिखते हैं कि :

"आज मैंने समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने हेतु यह इरादा किया है कि विरोधियों एवं इन्कार करने वालों को अपनी ओर बुलाने हेतु चालीस विज्ञापन प्रकाशित करूँ ताकि प्रलय के दिन मेरी ओर से ख़ुदा के समक्ष यह प्रमाण हो कि मैं जिस कार्य के लिए भेजा गया था मैंने उसे पूरा किया। इसलिए मैं सविनय आदरणीय मुसलमान उलेमा, ईसाई उलेमा, हिन्दू पंडितों तथा आर्यों की सेवा में यह विज्ञापन भेजता हूँ और सूचित करता हूँ कि मैं नैतिक, आस्थागत तथा ईमानी दोषों और ग़लतियों के सुधार के लिए संसार में भेजा गया हूँ और मेरा आचरण हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आचरण के समान है। इन्हीं अर्थों में मैं मसीह मौऊद कहलाता हूँ क्योंकि मुझे आदेश दिया गया है कि केवल अद्‌भुत निशानों तथा पवित्र शिक्षा के माध्यम से सच्चाई को संसार में प्रसारित करूँ। मैं इस बात का विरोधी हूँ कि धर्म के लिए तलवार उठाई जाए तथा धर्म के लिए ख़ुदा की सृष्टि का रक्तपात किया जाए और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं यथा संभव मुसलमानों से उन समस्त दोषों को दूर कर दूँ और पवित्र आचरण, संयम, शालीनता, न्याय और सच्चाई के मार्गों की ओर उन्हें बुलाऊं। मैं समस्त मुसलमानों, ईसाइयों, हिन्दुओं और आर्यों पर यह बात स्पष्ट करता हूँ कि संसार में कोई मेरा शत्रु नहीं है। मैं मानवजाति से ऐसा प्रेम करता हूँ कि जैसे दयालु माँ अपने बच्चे से अपितु उस से भी बढ़कर। मैं केवल उन मिथ्या आस्थाओं का शत्रु हूँ जिन से सच्चाई का ख़ून होता है। मानवजाति के साथ सहानुभूति करना मेरा कर्त्तव्य है तथा झूठ, अनेकेश्वरवाद, अन्याय और प्रत्येक दुष्कर्म, और दुराचार से विमुखता मेरा सिद्धान्त।

मेरी सहानुभूति का मूल प्रेरक यह है कि मैंने सोने की एक खान निकाली है और मुझे हीरों की खान का पता चला है तथा मुझे सौभाग्य से उस खान से एक चमकता हुआ बहुमूल्य हीरा मिला है। उस का इतना

मूल्य है कि यदि मैं उसे अपने समस्त बन्धुओं में वितरित करूँ तो सभी उस व्यक्ति से अधिक धनवान हो जाएंगे जिस के पास आज संसार में सब से अधिक सोना और चांदी है। (जानते हो) वह हीरा क्या है? सच्चा ख़ुदा। उसे प्राप्त करना यह है कि उसे पहचानना तथा उस पर सच्चा ईमान लाना और सच्चे प्रेम के साथ उस से संबंध स्थापित करना तथा उस से सच्ची बरकतें प्राप्त करना। अत: इतनी धन-सम्पत्ति पाकर बड़ा अन्याय है कि मैं मानवजाति को उस से वंचित रखूं और वे भूखे मरें और मैं ऐश्वर्य से जीवन व्यतीत करूँ। यह मुझ से कदापि नहीं होगा। मेरा हृदय उनकी दरिद्रता और भूख को देखकर दु:खी हो जाता है। उनके अंधकार और तंग आजीविका को देख मेरे प्राण घुटते हैं। मैं चाहता हूँ कि दैवीय धन से उन के घर भर जाएं तथा उन्हें सच्चाई और विश्वास के हीरे इतने मिलें कि उनके सामर्थ्य से झोली भर जाए।

स्पष्ट है कि प्रत्येक वस्तु अपनी ही प्रजाति से प्रेम करती है यहां तक कि चीटियां भी, यदि कोई स्वार्थ बीच में न आए। अत: जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर बुलाता है उसका कर्त्तव्य है कि सब से अधिक प्रेम करे। इसलिए मैं मानव-जाति से सर्वाधिक प्रेम करता हूँ। हाँ उनके दुष्कर्मों तथा प्रत्येक प्रकार के अन्याय, पाप और द्रोह का शत्रु हूँ, किसी व्यक्ति का शत्रु नहीं। इसलिए वह ख़ज़ाना जो मुझे मिला है जो स्वर्ग के समस्त ख़ज़ानों और नेमतों की कुंजी है वर प्रेमावेग से मानवजाति के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ। यह बात कि वह धन जो मुझे प्राप्त हुआ है वह वास्तव में वह हीरा, सोना और चांदी के प्रकार में से कोई खोटी वस्तुएं नहीं हैं, बड़ी आसानी से ज्ञात हो सकता है वह यह कि उन समस्त दिरहम-व-दीनार तथा हीरों पर बादशाही सिक्के का निशान है अर्थात् वह आकाशीय गवाहियां मेरे पास हैं जो किसी अन्य के पास नहीं हैं। मुझे बताया गया है कि समस्त धर्मों में से इस्लाम धर्म ही सच्चा है। मुझे कहा गया है कि समस्त निर्देशों में से केवल क़ुर्आनी निर्देश ही प्रमाणिकता की पूर्ण श्रेणी पर तथा मानवीय मिलावटों से पवित्र हैं। मुझे समझाया गया है कि समस्त रसूलों में से पूर्ण शिक्षा देने वाला तथा उच्च श्रेणी की पवित्र एवं नीतियुक्ति शिक्षा देने वाला तथा मानवीय कौशलों का अपने जीवन के माध्यम से उच्चादर्श प्रदर्शित करने वाला केवल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हैं। मुझे ख़ुदा की पवित्र और पावन वह्यी (ईशवाणी) द्वारा सूचित किया गया है कि मैं उसकी ओर से मसीह मौऊद और महदी-ए-मा'हूद तथा आन्तरिक और बाह्य मतभेदों का निर्णय करने वाला (हकम, मध्यस्थ) हूँ और मेरा नाम महदी रखा गया, इन दोनों नामों से हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने मुझे सम्मानित किया और फिर ख़ुदा ने अपने सीधे तौर पर वार्तालाप में मेरा यही नाम रखा और फिर युग की वर्तमान परिस्थिति ने मांग की कि यही मेरा नाम हो। अत: मेरे इन नामों पर ये तीन साक्षी हैं। मेरा ख़ुदा जो आकाश और पृथ्वी का स्वामी है उसे साक्षी रख कर कहता हूँ कि मैं उसकी ओर से हूँ और वह निशानों द्वारा मेरी गवाही देता है। यदि आकाशीय निशानों में कोई मुक़ाबला कर सके तो मैं झूठा हूँ। यदि दुआओं के स्वीकार होने में कोई बराबरी कर सके तो मैं झूठा हूँ। यदि क़ुर्आन के रहस्य और अध्यात्म ज्ञान वर्णन करने में कोई मेरा समतुल्य ठहर सके तो मैं झूठा हूँ। यदि परोक्ष की गुप्त बातें और भेद जो ख़ुदा की शक्ति के साथ समय से पूर्व मेरे द्वारा प्रकट होते हैं, तो इन में कोई मेरी बराबरी कर सके तो मैं ख़ुदा की ओर से नहीं हूँ।"

मनुष्य का काम है कि समय के अवतार की बातों पर विचार विमर्श करे और जहां सच्चाई देखे उसे स्वीकार करे।

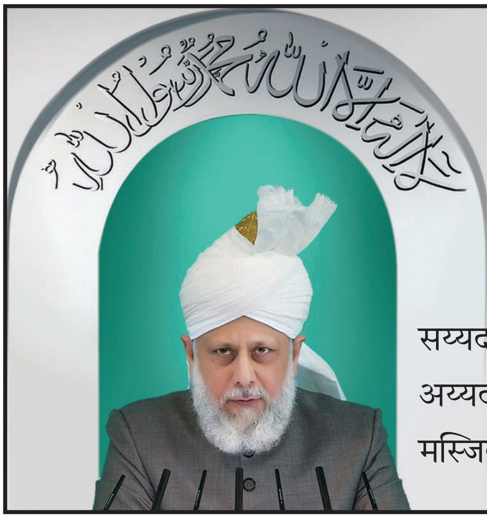

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 21.10.2022 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

अमरीका के दौरे 2022 के सफलता पूर्वक पूरा होने का विवरण, मेहमानों की अभिव्यक्तियाँ तथा अल्लाह तआला की कृपाओं का वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:-

पिछले दिनों मैं अमरीका की कुछ जमाअतों के दौरे पर था जो कि बहुत अच्छे से पूरा हुआ। एम टी ए तथा अन्य जमाअती इलैक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से सारी ख़बरें आती रहीं जबकि दुनियावी चैनल भी काफ़ी कवरेज देते रहे। हर दृष्टि से अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के दृश्य देखने में आए। अपनों तथा ग़ैरों पर अति सकारात्मक प्रभाव पड़े। लोगों की मुलाक़ात के बाद भावुक अभिव्यक्तियों की लम्बी सूचि है। हर जगह नमाज़ों में महिलाओं, बच्चों तथा अन्य लोगों की उपस्थिति व्यवस्थापकों की आशा से अधिक बढ़ कर होती थी। लोगों की भावनाओं की अभिव्यक्ति से स्पष्ट दिखाई देता था कि उनके दिलों में ख़िलाफ़त से प्रेम, निष्ठा एवं वफ़ा है। पढ़े लिखे, अमीर ग़रीब, बच्चे बड़े तथा सांसारिक दृष्टि से व्यस्त लोग भी कई कई घन्टे मस्जिद के अन्दर नमाज़ में शामिल होने के लिए लाईन में लगते थे। इन लोगों में यह बदलाव इस बात का संकेत है कि अल्लाह तआला की कृपा से दीन तथा जमाअत की मुहब्बत और ख़िलाफ़त से सम्बंध अमरीका की जमाअत के लोगों के दिलों में है। ग्यारह बारह साल की आयु के बच्चे भी कोविड टैस्टिंग इत्यादि के कारण घन्टों लाईन में लगे रहते थे किन्तु कभी किसी ने कोई आपत्ति नहीं की।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह करे कि यह निष्ठा एवं श्रद्धा के दृश्य सदैव अमरीका की जमाअत के लोगों में क़ायम रहें तथा मस्जिदें भी इसी तरह आबाद रहें। अमरीका में लोग दीन को भूल जाते हैं परन्तु मुझे उनमें से अधिकांश में इसकी ओर ध्यान दिखाई दिया कि आर्थिक दृष्टि से भी कमज़ोर लोग अपने तथा अपने बच्चों के दीन से जुड़े रहने की विशेष रूप से दुआ करते थे। अल्लाह तआला उनकी निष्ठा एवं श्रद्धा को सदैव बढ़ाता रहे। लजना, अन्सार, ख़ुद्दाम तथा बच्चों ने भी बड़े परिश्रम से इन दिनों अपनी ड्यूटियों का

निर्वाह किया है। कई कई दिन जाग कर तय्यारियाँ कीं। उपस्थिति भी हर जगह हज़ारों में होती थी। बैतुर्रहमान में तो जलसे से भी अधिक उपस्थिति थी परन्तु बड़ी व्यवस्था के साथ काम को संभाला। अल्लाह करे कि अमरीका की जमाअत के लोगों में यह बदलाव अस्थाई न हो बल्कि सदा के लिए हो। अल्लाह तआला ने ग़ैरों के दिलों पर भी विशेष प्रभाव डाला है। अल्लाह तआला उनके सीने और अधिक खोले तथा ये लोग सत्य को पहचानने वाले बन जाएँ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि ज़ायन में मस्जिद फ़त्ह अज़ीम के उदघाटन समारोह में १६१ ग़ैर-मुस्लिम तथा ग़ैर अज़-जमाअत मेहमान आए जिनमें कांग्रेस मैन, कांग्रेस वूमैन, मेयर्ज़, डाक्टर्ज़, प्रोफ़ैसर्ज़, टीचर्ज़, वकील, इंजीनियर्ज़ तथा जीवन के विभिन्न वर्गों से सम्बंध रखने वाले लोग शामिल हुए। हुज़ूर-ए-अनवर ने अनेक मेहमानों की अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत कीं जिनमें से उदाहरण के तौर पर कुछ पेश की जाती हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- ज़ायन शहर के मेयर बिली मैक्कनी साहब ने अपनी अभिव्यक्ति में बयान किया कि मेरे लिए अहमदिया जमाअते मुस्लिमा के विश्व स्तरीय प्रमुख को मस्जिद फ़त्ह अज़ीम के उदघाटन समारोह पर अभिनन्दन करना अत्यंत सम्मान सूचक है। मेरी इच्छा है कि यह इबादतगाह हमारे अतीत एवं भविष्य के बीच एक पुल का काम करे। अहमदिया कम्युनिटी की ओर से इस नगर के लिए वैभव पूर्ण सेवाएँ की गईं हैं जिनके लिए मैं आभारी हूँ और हम इस नगर की चाबी इमाम जमाअते अहमदिया की सेवा में पेश करते हैं।

मेम्बर ऑफ़ इलिनोए जनरल एसैम्बली ऑनरेबिल जवाएस मैसन ने कहा कि यहाँ ज़ायन में इस मस्जिद के एतिहासिक समारोह का अंश बनना मेरे लिए एक सम्मान की बात है। आज इस नगर के लिए यह एक एतिहासिक दिन है। इलैगज़न्डर डोवी ने इस नगर के द्वार अपने मानने वालों के अतिरिक्त सबके लिए बन्द कर दिए थे परन्तु आज इस नगर के द्वार समस्त लोगों के लिए खुले हैं तथा मैं इस पर अहमदिया कम्यूनिटी को मुबारकबाद देती हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा है कि यह मस्जिद न केवल इस नगर अपितु चारों दिशाओं के लिए आशा ज्यूति बन जाए। मैं इस कम्यूनिटी को इस मस्जिद के उदघाटन पर मुबारकबाद देते हुए संसद में एक प्रस्ताव पेश कर रही हूँ। एक मेहमान जैनेफ़र कहती हैं कि यदि आपकी जमाअत के नियमों की बात की जाए तो वे सबसे उत्तम हैं। जब आप ज़ायन नगर में क़दम रखते हैं तो एक पुराने भवन पर एक माटो "मुहब्बत सबके लिए नफ़रत किसी से नहीं" का सन्देश दिखाई देता है तथा उसकी गूंज आपके साथ रहती है तथा यह ज़ायन नगर की मूल आत्मा है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि डेलास में भी मस्जिद का उदघाटन हुआ जिसमें १४० ग़ैर मुस्लिम तथा ग़ैर अज़-जमाअत शामिल हुए। एलेन नगर सिटी कौंसल के मेम्बर जिन्होंने नगर की चाबी पेश की थी, कहा कि आज मस्जिद बैतुल इकराम के उदघाटन समारोह में शामिल होना एक अत्यंत सम्मान की बात है, मैं जमाअते अहमदिया को इसकी मुबारकबाद देता हूँ। हम अहमदिया जमाअत की सेवाओं की सराहना करते हैं जो इस नगर के निर्धनों की सहायता करते हैं। इस नगर का सौभाग्य है कि शांति प्रिय तथा मानवता की सेवा करने वाली कम्यूनिटी ने यहाँ मस्जिद बनाई है। मेरी इच्छा है कि यह मस्जिद इस नगर तथा इस क्षेत्र के लिए

आशा की किरण साबित हो।

सदर्न यूनिवर्सिटीज़ के प्रोफ़ेसर डाक्टर राबर्ट हन्ट ने इस समारोह में आमन्त्रित करने पर अहमदिया जमाअत का धन्यवाद किया तथा कहा कि इमाम जमाअते अहमदिया दो गुणों को प्रचार प्रसार देने के लिए वक्फ़ हैं जिनमें से पहली धार्मिक स्वतंत्रता तथा दूसरी धर्मों के बीच वार्ता तथा सम्बोधन है। इतिहास साक्षी है कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत को अत्याचार का निशाना बनाया गया इसी कारण से यह जमाअत धार्मिक स्वतंत्रता लाने के प्रयासों में अग्रणीय रही है। जब तक हम एक दूसरे की धार्मिक स्वतंत्रता का सम्मान नहीं करेंगे, हम मतभेदों पर क़ाबू नहीं पा सकते।

एक मुसलमान मेहमान सुलतान चौधरी साहब ने कहा कि जमाअत अहमदिया के इमाम ने विश्व के लिए शांति का एक उत्तम सन्देश दिया है। एक मुसलमान मेहमान डा. हलीमुर्रहमान साहब ने कहा कि एक आयोजन का प्रबन्ध तथा आतिथ्य व्यवस्था विश्वास से परे थी, मैं इस आदर सतकार के योग्य नहीं था जो मुझे दिया गया। यह पूरा वातावरण देख कर आपके सम्मान जनक व्यवहार से मेरी आँखें भीग गई हैं। मुझे इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर अमल करने वाले उत्तम मनुष्यों के बीच समय व्यतीत करने का अवसर मिला।

एक महिला विकटोरिया साहिबा कहती हैं कि मुझे यहाँ सबसे स्पष्ट चीज़ जमाअत के इमाम का सम्बोधन लगा कि किस तरह धार्मिक मतभेद तथा विभिन्न विचारों के बावजूद हम सब आपस में एक दूसरे से जुड़े हैं और यह ऐसी बात है जिसकी आजकल धार्मिक वार्ताओं में कमी दिखाई देती है। फिर एक मेहमान महिला मैरी मैक्डरमट (रूड्डह्म्4 रूष्स्रद्गह्म्द्बशह्लह्ल) जो कि इस मस्जिद की पड़ौसी हैं और जिनकी बहुत बड़ी ज़मीन है और जिन्होंने पार्किंग के लिए जगह भी दी थी, कहती हैं कि मैं पहले कभी भी ज़मीन के इस धूल भरे प्लाट से इतना ख़ुश नहीं हुई थी जितनी आज इस प्रोग्राम के लिए जगह देने से ख़ुश हूँ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि डेलास से पचास मील की दूरी पर एक स्थान फ़ोर्ट वर्थ नामक में पौने पाँच एकड़ पर एक भवन ख़रीदा गया था जहाँ एक गुम्बद तथा दो मीनार निर्माण करने की योजना है ताकि मस्जिद का रूप दिया जाए, एक अच्छी जगह है, जमाअत के लोग यहाँ नमाज़ें भी पढ़ते हैं। मुझे भी वहाँ मग़रिब तथा इशा की नमाज़ें पढने का अवसर मिला। एक मेहमान ऐबे करक साहब जो फ़ोर्ट वर्थ में रहते हैं तथा डेलास में मस्जिद के उदघाटन पर आए हुए थे, कहते हैं कि जमाअत के इमाम ने ख़ुदा तआला की इच्छानुसार एक दूसरे के साथ मिल जुल कर काम करने का सन्देश अति सुन्दर रंग में दिया। अमन शांति तथा न्यूक्लियर युद्ध से बचाव का पैग़ाम मेरे लिए विशेष महत्त्व रखता है। फ़ोर्ट वर्थ से ही एक चर्च की मेम्बर जो डेलास में आई हुई थीं, कहती हैं कि पैग़ाम अति भव्य था। हर एक को ख़लीफ़: के इस स्पष्ट सन्देश को अवश्य सुनना चाहिए। हाई स्कूल की एक टीचर कहती हैं कि ख़लीफ़: की दो बातों ने मुझे अति प्रभावित किया, एक यह कि उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि समाज में इस्लाम के विरुद्ध आशंकाएँ मौजूद हैं और ये चीज़ें मैं अपने विद्यार्थियों के अन्दर देखती रहती हूँ। दूसरी चीज़ जिसकी मैं बड़ी सराहना करती हूँ वह ख़लीफ़: का न्यूक्लियर हथ्यिारों के उपयोग के विरुद्ध चेतावनी देना था। आजकल की परिस्थितियों में इस प्रकार का विवेक पूर्ण सन्देश सुनकर बड़ा अच्छा लगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि ज़ायन की मस्जिद फ़त्ह अज़ीम में डोवी के मुबाहिले के संदर्भ में एक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मजमूअ: इश्तिहारात जिल्द सोम (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के संकलित विज्ञापन, भाग-३) में ३२ समाचार पत्रों के नाम लिखे हैं जिनमें इस मुबाहिले का वर्णन हुआ था। अहमदिया जमाअत अमरीका के अनुसंधान के अनुसार १२८ समाचार पत्र ऐसे मिले हैं जिनमें इस मुबाहिले का वर्णन है। इस प्रकार केवल अमरीका के कुल १६० समाचार पत्रों में वर्णन हुआ। ये समस्त समाचार पत्र डिजिटल रूप में इस प्रदर्शनी में मौजूद थे। इस प्रकार विभिन्न समाचार पत्र तथा न्यूज़ चैनल्ज़ में भी मेरे दौरे के विषय में समाचार प्रसारित हुए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने ईसाइयत से अहमदी होने वाले एक अमरीकन नौ-मुबाय करस्टोफ़र साहब की बैअत का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि इस बैअत से पुराने तथा विभिन्न देशों से आने वाले प्रवासी अहमदियों पर भी एक अच्छा प्रभाव हुआ तथा उन्हें भी बैअत करने का अवसर मिल गया जिससे बड़ी भावुक अवस्था उत्पन्न हो गई थी। अतएव अल्लाह तआला ने इस दौरे को सामूहिक रूप से हर एक दृष्टि से अपने फ़ज़्ल प्रदान किए हैं, अल्लाह तआला भविष्य में भी सदैव प्रदान करता रहे।

ख़ुत्ब: के अंत में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि शेष वर्णन इंशाअल्लाह आगे बयान होगा।

किसी जानकारी हेतु टोल फ्री नम्बर अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान- 1800 103 2131

☆ ☆ ☆

रसूल की मातृभाषा में इलाहाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं :

कुछ लोग मूर्खता से ऐतराज़ करते हैं कि पवित्र कुरान में है कि हर एक की मातृभाषा में इल्हाम होना चाहिए जैसे وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوۡمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمۡ (इब्राहीम- 14/5) (अर्थात: और हमने कोई पैग़ंबर नहीं भेजा सिवाए उस की क़ौम की भाषा में, ताकि वह उन्हें ख़ूब खोल कर समझा सके) परंतु तुमको अरबी में ही क्यों होते हैं? तो एक तो इसका उत्तर यह है कि खुदा से पूछो कि क्यों होते हैं। और इसका वास्तविक भेद यह है कि केवल संबंध जताने के उद्देश्य से अरबी में इलहाम होते हैं क्योंकि हम अनुयाई हैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के, जो कि अरबी थे। हमारा कारोबार सब प्रतिरूपी है और खुदा लिए है। फिर यदि उसी भाषा में इलहाम न हों तो संबंध नहीं रहता। यही कारण है कि खुदा तआला महानता देने के लिए अरबी में इलहाम करता है और अपने धर्म को संरक्षित करना चाहता है। जिसे हम आनंद कहते हैं वे उस पर आपत्ति करते हैं। खुदा मूल अनुसरणीय की भाषा नहीं छोड़ता। और जिस अवस्था में यह सब कुछ उसी (आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के लिए है और उसके समर्थन के लिए है, तो उससे कोई संबंध कैसे टूटे? और कभी-कभी अंग्रेज़ी, उर्दू और फारसी में भी इल्हाम हुए हैं ताकि खुदा तआला यह दिखाए कि वह हर भाषा जानता है। (मलफ़ूज़ात भाग- 3)

क़ुर्आन की विशेषताएं (फ़ज़ाइलुल-क़ुर्आन) भाग-1

भाषण: हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ी०

(क़िस्त-1)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

क़ुर्आन की विशेषताएं नम्बर (1)

पवित्र क़ुर्आन की भूतपूर्व इल्हामी पुस्तकों पर प्राथमिकता और यूरोपीय पाश्चात्यविदों के आरोपों का खण्डन

...मेरे निकट पवित्र क़ुर्आन पर सामूहिक रूप से दृष्टि डालने के लिए निम्नलिखित विषयों पर विचार करना है:

क़ुर्आन की आवश्यकता

प्रथम- क्या उस समय जबकि पवित्र क़ुर्आन अवतरित हुआ दुनिया को किसी इल्हामी पुस्तक की आवश्यकता थी अथवा नहीं? क्योंकि जब तक यह सिद्ध न हो कि कोई चीज़ यथा अवसर अवतरित हुई है उस वक़्त तक ख़ुदा तआला की ओर वह सम्बद्ध(मन्सूब) नहीं की जा सकती। बहुत लोग कहते हैं कि जब पवित्र क़ुर्आन अवतरित हुआ तो उस वक़्त लोगों की हालत ख़राब थी। परन्तु लोगों की हालत ख़राब होने के कारण आवश्यक नहीं होता कि ख़ुदा तआला की ओर से कोई पुस्तक भी अवतरित हो। देखो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस समय पधारे जब लोगों की व्यावहारिक हालत बिलकुल ख़राब हो चुकी थी। परन्तु क्या आप कोई पुस्तक लाए।? अत: यह कहना कि लोगों की आदतें ख़राब हो गई थीं दुराचार तथा कदाचार पैदा हो गया था यह इस बात के लिए काफ़ी नहीं कि उस युग में पवित्र क़ुर्आन की भी आवश्यकता थी। या यह कि अरबों में बुरी रस्में पैदा हो गई थीं, बेटियों को मार डालते थे, सौतेली माताओं से शादी कर लेते थे, इस से ज़्यादा से ज़्यादा यह सिद्ध होगा कि अरबों के लिए एक पुस्तक की आवश्यकता थी परन्तु यह सिद्ध नहीं होगा कि सारे संसार के लिए आवश्यकता थी। जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समय बनी इस्राईल की हालत बहुत ख़राब थी। परन्तु उस का यह अर्थ नहीं था कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सारे संसार के लिए आए थे। हमें जो चीज़ सिद्ध करनी चाहिए वह यह है कि उस युग में समस्त धार्मिक पुस्तकों में ऐसा बिगाड़ पैदा हो गया था कि वे अपनी ज़ात में दुनिया को तसल्ली देने के लिए अपर्याप्त थीं। अत: क़ुरआन करीम के अवतरित होने की आवश्यकता को सिद्ध करने के लिए पहली पुस्तकों में बिगाड़ सिद्ध करना ज़रूरी है।

पवित्र क़ुर्आन की वह्यी किस प्रकार अवतरित हुई

(2) दूसरे इस बात पर रोशनी डालना ज़रूरी है कि पवित्र क़ुर्आन की वह्यी किस प्रकार अवतरित हुई? क्योंकि किसी वह्यी के अवतरित होने के तरीक़े से भी बहुत कुछ उस की सत्यता का पता लग सकता है। उदाहरण के तौर पर इस बात पर बहस करते हुए यह प्रश्न सामने आ जाएगा कि जिस इन्सान पर यह वह्यी अवतरित हुई क्या उस के अवतरित होने के समय की अवस्था से यह तो स्पष्ट नहीं होता कि उस इन्सान का नऊज़ु बिल्लाह

दिमाग़ ख़राब था। बीसियों लोग होते हैं जो कहते हैं हमें ये ये इलहाम हुआ। वे अपनी ओर से झूठ नहीं बोल रहे होते। परन्तु उनका दिमाग़ ख़राब होता है। एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास एक व्यक्ति आया और उसने आकर कहा कि मुझे भी इलहाम होता है। आप उस की बात सुनकर ख़ामोश रहे उसने फिर कहा। जब मैं सज्दा करता हूँ तो ख़ुदा तआला मुझे कहता है। अर्श पर सज्दा कर और कहता है, तू मुहम्मद है, तू ईसा है, तू मूसा है। आपने फ़रमाया। क्या जब तुम्हें मुहम्मद कहा जाता है तो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वाला जमाल और जलाल भी दिया जाता है या पवित्र क़ुर्आन के उलूम भी तुम पर खोले जाते हैं? उसने कहा नहीं, आपने फ़रमाया फिर ख़ुदा तआला तुम्हें अर्श पर नहीं ले जाता है, बल्कि शैतान बहकाता है यदि ख़ुदा तुम्हें अर्श पर ले जाता और मुहम्मद क़रार देता तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वाली शक्तियां भी तुम्हें आप(स) की ग़ुलामी में प्रदान करता। तो पवित्र क़ुर्आन की वह्यी के अवतरण पर बहस करते हुए यह प्रश्न भी सामने आ जाएगा कि जिस व्यक्ति पर यह कलाम उतरा वह ऐसा तो न था कि पागल हो या उस के दिमाग़ में कोई और दोष हो।

क़ुरआन के एकत्र (इकट्ठा) किए जाने पर बहस

(3) तीसरा प्रश्न पवित्र क़ुर्आन पर नज़र डालते समय यह सामने आएगा कि पवित्र क़ुर्आन किस तरह इकट्ठा हुआ? यह प्रश्न अपने आप उत्पन्न होता है कि जो पुस्तक दुनिया के सामने प्रस्तुत की क्या इसी अवस्था में सामने आई है जो उस के अवतरित करने वाले की इच्छा थी? यदि उसी अवस्था में सामने आई है तब तो ज्ञात हुआ कि इस पर ग़ौर करने से वह सही इच्छा पता चल जाएगी, जो प्रस्तुत करने वाले की थी। परन्तु यदि इस में कोई ख़राबी और दोष पैदा हो गया है तो फिर इस पुस्तक के प्रस्तुत करने वाले की जो इच्छा थी वह नष्ट हो गई। फिर इस की ओर ध्यान देने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। यूरोप के लोगो ने यह सिद्ध करने की बड़ी कोशिश की है कि पवित्र क़ुर्आन ठीक रूप से जमा नहीं हुआ। वे कहते हैं पवित्र क़ुर्आन की पंक्तियों का कोई क्रम नहीं यूं ही विभिन्न बातों को इकट्ठा कर दिया गया है।

क़ुरआन करीम की हिफ़ाज़त का विषय

(4) चौथी चीज़ यह सिद्ध करनी होगी कि क़ुरआन अब तक सुरक्षित भी है। यदि हम यह सिद्ध कर दें कि क़ुरआन सही तौर पर प्रस्तुत करने वाले की इच्छा के अनुसार जमा हुआ है परन्तु यह कहा जाए कि इस में कुछ अधिक भाग भी सम्मिलित हो गया है या इस में से कुछ भाग नष्ट हो गया है तो फिर प्रश्न होगा कि पुस्तक अब मूल रूप में नहीं रही। इस कारण यह वह लाभ नहीं दे सकती जिसके लिए आई थी और दुनिया के लिए सम्पूर्ण हिदायतनामा (मार्ग दर्शक) नहीं हो सकती।

इस के लिए भी ईसाई इतिहासकारों ने बड़ा ज़ोर लगाया है और यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि पवित्र क़ुर्आन सुरक्षित नहीं है।

पवित्र क़ुर्आन का पहली पुस्तकों से सम्बन्ध

(5) पांचवां प्रश्न जिस पर ध्यान देना ज़रूरी है वह यह है कि पवित्र क़ुर्आन का पहली पुस्तकों से क्या सम्बन्ध है। क्या पवित्र क़ुर्आन पहली पुस्तकों को सत्यापित करता है या नहीं? यदि है तो किस प्रकार? उनको

वर्तमान अवस्था में ठीक स्वीकार करता है या यह कहता है कि पहले सही उतरी थीं परन्तु अब बिगड़ गई हैं। यूरोप के लोगों ने इस बात के सिद्ध करने के लिए बड़ी चेष्टा की है कि पवित्र क़ुर्आन ने पहली पुस्तकों को उनकी वर्तमान अवस्था में सही स्वीकार किया है। इस से उनका उद्देश्य यह है कि जब पवित्र क़ुर्आन ने इन पुस्तकों की वर्तमान अवस्था को ठीक स्वीकार किया है तो फिर पवित्र क़ुर्आन का उनसे जो मतभेद होगा वह ग़लत होगा। सर विलियम म्यूर ने इस पर एक पुस्तक भी लिखी है। इस में उसने यह परिणाम निकाला है कि पवित्र क़ुर्आन के निकट पहली पुस्तकें ठीक हैं।

पवित्र क़ुर्आन का पहली पुस्तकों द्वारा सत्यापन

(6) छठा प्रश्न यह होगा कि इतनी महान पुस्तक जो यह दावा करती है कि सारे संसार के लिए है इस का सत्यापन पहली पुस्तकों से होता है अथवा नहीं और क्या पवित्र क़ुर्आन का वर्णन पहली पुस्तकों में मौजूद है? ताकि लोग मालूम कर लें कि पहली पुस्तकों में इस की जो ख़बर दी गई थी यह उसी के अनुसार है।

पवित्र क़ुर्आन में पहली पुस्तकों की अपेक्षा अधिक विशेषताएं

(7) सातवाँ प्रश्न उस के साथ ही यह पैदा हो जाएगा कि पवित्र क़ुर्आन पहली पुस्तकों से कौन सी अधिक चीज़ लाया है। या तो वह यह कहे कि पहली सब पुस्तकें झूठी हैं इसलिए मुझे अवतरित किया गया है। परन्तु यदि वह यह कहता है कि वे भी सच्ची हैं तो फिर यह दिखाना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन अधिक विशेषताएं क्या प्रस्तुत करता है। वर्ना उस के अवतरित होने की आवश्यकता सिद्ध न होगी। अत: यह सिद्ध करना भी ज़रूरी होगा कि क़ुरआन दूसरी पुस्तकों के मुक़ाबला में उत्तम है।

क़ुर्आन का क्रम (तरतीब)

(8) एक प्रश्न यह भी होगा कि क्या पवित्र क़ुर्आन में किसी क्रम का ध्यान रखा गया है? अर्थात इस में कोई अर्थ की दृष्टि से क्रम है? यूरोप वाले कहते हैं कि इस में कोई क्रम नहीं। बिलकुल बिना क्रम के कलाम है। और आश्चर्यजनक बात यह है कि मुसलमान उलमा ने भी इस बात को स्वीकार कर लिया है कि क़ुरआन में नऊज़ु बिल्लाह कोई क्रम नहीं। परन्तु किसी पुस्तक का क्रमहीन सिद्ध होना इस पर बहुत भारी हमला है और यदि उस में क्रम है तो फिर यह प्रश्न पैदा होता है कि यह क्रम उस तरह नहीं जिस तरह अवतरित हुआ था। पहली उतरी हुई आयतें पीछे और पिछली पहले कर दी गई हैं। सूरत अलक़ पहले अवतरित हुई परन्तु बाद में रखी गई और सूरत फ़ातिहा बाद में अवतरित हुई और उसे पहले रखा गया है। इसी तरह और आयतों को भी आगे पीछे किया गया है। मक्का में कुछ आयतें उतरीं जिन्हें मदनी सूरतों में लिखा गया है। और कुछ मदीना में उतरीं उन्हें मक्की सूरतों में लिखा गया है। अब प्रश्न यह है कि यदि वास्तव में पवित्र क़ुर्आन के क्रम का ध्यान रखा गया था तो फिर क्यों इसी तरह जमा न किया गया जिस तरह अवतरित हुआ था। और यदि वह क्रम सही है जिसमें अब क़ुरआन मौजूद है तो फिर क्यों उसी क्रम से अवतरित न हुआ?

यह एक प्रमुख प्रश्न है जो यूरोप वालों ने उठाया है। उसे ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से उसूली तौर पर मैंने इस तरह हल किया है कि हर समझदार की समझ में आ जाएगा।

नासिख़ तथा मंसूख़ की बहस

(9) एक प्रश्न पवित्र क़ुर्आन के सम्बन्ध में नासिख़ तथा मंसूख़ का आ जाता है। यह ख़ुद मुसलमानों की पैदा की हुई है। क्योंकि उनकी यह आस्था है कि पवित्र क़ुर्आन की कुछ आयतें निरस्त हैं। उन्हें कुछ दूसरी आयतों या हदीसों ने निरस्त कर दिया है। वे पढ़ी तो जाएँगी परन्तु उन पर का पालन नहीं किया जाएगा।

यूरोप वालों ने इस के सम्बन्ध में कहा है कि नासिख़ मंसूख़ का ढकोसला इसलिए बनाया गया है कि पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट विपरीत बातें पाई जाती हैं। जब उसे दूर करने की मुसलमानों को कोई सूरत नज़र न आई तो उन्होंने विपरीत अर्थों वाली आयतों में से एक आयत को नासिख़ और दूसरी को मंसूख़ क़रार दिया।

नुज़ूल क़ुरआन का मक़सद और उस का पूरा होना

(10) फिर एक यह भी प्रश्न है कि क्या पवित्र क़ुर्आन इस मक़सद को पूरा करता है जिसके लिए कोई धर्म अवतरित होता है? हर एक इल्हामी पुस्तक उसी समय लाभदायक हो सकती है जब इस उद्देश्य को पूरा करे जिसे इल्हामी पुस्तक को पूरा करना चाहिए। और लोग जिन इल्हामी पुस्तकों को मानते हैं उनकी कोई न कोई आवश्यकता भी सिद्ध करते हैं और कहते हैं कि ख़ुदा तआला की ओर से पुस्तक आने की अमुक-अमुक आवश्यकता थी। अब प्रश्न यह है कि क्या पवित्र क़ुर्आन इस आवश्यकता को पूरा करता है जिसके लिए वह अवतरित हुआ है? यदि करता है तो ख़ुदा तआला की पुस्तक है वर्ना नहीं।

इन्सान की प्रकृति (फितरत) के अनुसार शिक्षा

(11) फिर पवित्र क़ुर्आन का यह दावा है कि वह हर वर्ग और हर दर्जा की प्रकृति के लोगों के लिए है। अब प्रश्न पैदा होता है कि क्या पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा वास्तव में ऐसी है कि उस से एक अनपढ़ भी लाभ उठा सकता है और यदि एक ज्ञानी पढ़े तो वह भी लाभान्वित हो सकता है? यदि उस की शिक्षा ऐसी है तो यह पुस्तक ख़ुदा तआला की ओर से कहला सकती है, वर्ना नहीं।

क़ुर्आन को समझने के उसूल (सिद्धान्त)

(12) एक और प्रश्न हमारे सामने यह आता है कि पवित्र क़ुर्आन के समझने के उसूल क्या हैं? हर पुस्तक को समझने और इस से लाभान्वित होने के लिए कोई न कोई चाबी होती है। पवित्र क़ुर्आन के समझने के लिए किन उसूलों की आवश्यकता है? मानो पवित्र क़ुर्आन को तफ़सीर के उसूल भी वर्णन करने चाहिए ताकि उनसे काम लेकर हर इन्सान अपनी समझ और अपने ज्ञान के अनुसार क़ुरआन की समझ को प्राप्त कर सके।

पवित्र क़ुर्आन को पहली पुस्तकों का सत्यापित करने वाला किन अर्थों में कहा गया है।

(13) एक प्रश्न यह भी है कि कुछ लोग कहते हैं क़ुरआन इसलिए पहली पुस्तकों का सत्यापित करने वाला है कि क्यों उन पुस्तकों की नक़ल करता है। इस नक़ल के आरोप से बचने के लिए कहा गया है कि क़ुरआन उनका सत्यापित करने वाला है। हम कहते हैं बे-शक क़ुरआन उनको सत्यापित करता है परन्तु उनके विरुद्ध भी तो कहता है। अब हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम सिद्ध करें कि क़ुरआन दूसरी पुस्तकों से क्या नक़ल करता है और क्या छोड़ता है? और जो बात नक़ल करता है उसे पहली पुस्तक से अधिक वर्णन करता है या नक़ल करते हुए पहली पुस्तकों से मतभेद करता है।? ऐसी अवस्था में क्या कारण है कि हम क़ुरआन की बात को स्वीकार करें।

पुरानी घटनाओं को वर्णन करने का उद्देश्य

(14) फिर क़ुरआन में पुरानी घटनाएं वर्णन की गई हैं। उनके सम्बन्ध में प्रश्न पैदा होता है कि उनको क्यों वर्णन किया गया है। क्या क़ुरआन क़िस्से कहानियों की पुस्तक है?अत: रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय ही कुफ़्फ़ार की ओर से कहा गया था कि: اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ (सूरत अल्अनाम आयत 26) अर्थात क़ुरआन तो पहले लोगों के क़िस्से कहानियां हैं।

क़स्मों (सौगन्धों) की वास्तविकता

(15) यह प्रश्न भी शंकाए पैदा करता है कि पवित्र क़ुर्आन में क़स्में क्यों खाई गई हैं? क़स्मों से तो यह स्पष्ट होता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कलाम बनाया और वह यह बात भूल गए कि उसे ख़ुदा का कलाम क़रार दे रहे हैं। इसलिए क़स्में खाने लगे। इस प्रकार की शंकाएं दूर करने के लिए ज़रूरी है कि बताया जाए कि ख़ुदा तआला के कलाम में भी क़स्में होती हैं और उनका क्या कारण होता है।

चमत्कारों पर बहस

(16) इसी तरह यह भी कहा जाता है कि पवित्र क़ुर्आन में बार-बार इस बात पर ज़ोर देना कि कोई निशान (चमत्कार) दिखाना रसूल के अधिकार में नहीं, जब ख़ुदा चाहता है निशान दिखाता है। यह वास्तव में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पर्दापोशी के लिए है। इस के सम्बन्ध में यह सिद्ध करना ज़रूरी है कि सारे का सारा क़ुरआन निशानों (चमत्कारों) का सार है।

ख़ुदा तआला के कथन और कर्म में कोई मतभेद नहीं

(17) इसी तरह पवित्र क़ुर्आन के सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह साईंस और प्रकृति के ज्ञान के विरुद्ध बातें प्रस्तुत करता है। चूँकि ख़ुदा तआला का कथन उस के कर्म के विरुद्ध नहीं हो सकता इसलिए यह सिद्ध करना भी ज़रूरी है कि ख़ुदा तआला का कलाम उस के किसी कर्म के विरुद्ध नहीं है। इस में ऐसी सच्चाइयां हैं जो पहले लोगों को मालूम न थीं। और उन्हें प्रकृति के ज्ञान के ख़िलाफ़ क़रार दिया जाता था परन्तु अब उन्हें ठीक क़रार दिया जाता है।

पवित्र क़ुर्आन की आध्यात्मिक विशेषताएं

(18) यह भी सिद्ध करना होगा कि पवित्र क़ुर्आन में क्या विशेषताएं हैं और पवित्र क़ुर्आन मानव जाति को किस उच्च आध्यात्मिक स्थान पर पहुंचाने के लिए आया है।

शरीयत वाली अन्तिम वाणी

(19) यह भी सिद्ध करना होगा कि क़ुरआन ख़ुदा तआला का शरीयत वाला अन्तिम कलाम है। लोग कहते हैं जब तुम यह मानते हो कि ख़ुदा तआला की ओर से हमेशा कलाम अवतरित होता रहा है तो अब शरीयत वाला कलाम का आना क्यों बंद हो गया। इस के लिए यह सिद्ध करना ज़रूरी है कि अब किसी और शरीयत वाले कलाम की आवश्यकता नहीं।

अरबी भाषा को अपनाने का कारण

(20) फिर इस बात पर बहस करना भी ज़रूरी है कि पवित्र क़ुर्आन के लिए अरबी भाषा क्यों अपनाई गई क्यों फ़ारसी, संस्कृत या कोई और भाषा अपनाई न गई?

पहली शिक्षाओं के दोषों का उसूली रद्द और सही उसूल का वर्णन

(21) फिर जब पवित्र क़ुर्आन सारी दुनिया के लिए आया है और समस्त पहली धार्मिक शिक्षाओं का उत्तराधिकारी है तो यह सिद्ध करना भी ज़रूरी होगा कि इन शिक्षाओं में जो दोष थे उनको उसूली तौर पर पवित्र क़ुर्आन ने दूर कर दिया है और उनके स्थान पर सही उसूल स्थापित किए हैं।

पवित्र क़ुर्आन की सच्चाई के सुबूत

(22) फिर पवित्र क़ुर्आन की सच्चाई के सुबूत भी प्रस्तुत करने होंगे कि इस के ख़ुदा तआला की ओर से अवतरित होने के ये ये सबूत हैं।

पवित्र क़ुर्आन के प्रभाव

(23) पवित्र क़ुर्आन के प्रभावों पर भी बहस करनी होगी।

मुतशाबिहात का हल

(24) मुतशाबिह आयतों को हल करना भी ज़रूरी है। पवित्र क़ुर्आन यह तो कहता है कि इस में कुछ आयतें मुतशाबिहात हैं परन्तु यह नहीं बताता कि कौन-कौन सी हैं। जब तक इन आयतों का पता न हो सारे क़ुरआन को मुतशाबिहात कहना पड़ेगा। मुझे अल्लाह तआला ने इस बारे में भी ऐसा ज्ञान दिया है कि मामूली से मामूली इल्म रखने वाले के लिए भी मुतशाबिहात का पता लगाना मुश्किल नहीं रह जाता और इसी प्रकार यह कि मुतशाबिह आयतें पवित्र क़ुर्आन की सच्चाई का एक ज़बरदस्त सबूत हैं।

हुरूफ़े मुक़त्तेआत का हल

(25) हुरूफ़े मुक़त्तेआत पर बहस करनी भी ज़रूरी है कि उनकी क्या आवश्यकता और उद्देश्य है।

सात क़िरअतों से क्या अभिप्राय है

(26) यह जो कहा जाता है कि पवित्र क़ुर्आन की सात किरअतें हैं उनसे क्या अभिप्राय है? यह बहस भी ज़रूरी है

ख़ल्क़-ए-क़ुर्आन का विषय

(27) कलाम इलाही को ख़ुदा तआला के इल्म से क्या सम्बन्ध है। पहले ज़माना में इस पर बहुत बड़ी बहस हुई है और बड़े बड़े उलमा को ख़ल्क़ क़ुरआन के विषय पर मारें पड़ी हैं। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल को अब्बासी ख़लीफ़ा ने मार मार कर इतना चूर कर दिया कि उनका देहान्त हो गया। अत: ख़ल्क़ क़ुरआन के विषय पर भी बहस ज़रूरी है अर्थात यह कि ख़ुदा के कलाम को ख़ुदा से क्या सम्बन्ध है।

पवित्र क़ुर्आन एक ज़िन्दा पुस्तक है।

(28) फिर एक बहस यह भी ज़रूरी है कि पवित्र क़ुर्आन एक ज़िन्दा पुस्तक है। किसी पुस्तक की भविष्यवाणियां बता देना कि वे पूरी हो रही हैं उस की ज़िन्दगी का सबूत नहीं। तौरात और इंजील की कुछ भविष्यवाणियां भी अब तक पूरी हो रही हैं। परन्तु उन पुस्तकों से वह मद्देनज़र पूरा नहीं हो रहा जो उनके अवतरित होने के समय समक्ष था। परन्तु पवित्र क़ुर्आन आज भी उस उद्देश्य को पूरा कर रहा है जिसे लेकर वह अवतरित हुआ था।

पवित्र क़ुर्आन किन किन उलूम (ज्ञानों) का वर्णन करता है

(29) फिर यह वर्णन करना भी ज़रूरी है कि पवित्र क़ुर्आन किन किन उलूम का वर्णन करता है। अर्थात प्रश्न यह है कि धर्म को कहाँ तक दूसरे विषयों से सम्बन्ध है। आचरण, राजनीति सभ्यता इत्यादि धर्म में शामिल हैं अथवा नहीं।

क़ुरआन बहुअर्थी है

(30) यह बहस भी ज़रूरी है कि क़ुरआन बहुअर्थी है और यह उस की विशेषता है दोष नहीं कि एक आयत के कई कई अर्थ होते हैं।

क़ुरआन सम्पूर्ण पुस्तक है

(31) इस बात पर बहस करनी भी आवश्यक है कि पवित्र क़ुर्आन सम्पूर्ण पुस्तक है और अब किसी और आकाशीय पुस्तक की आवश्यकता नहीं। परन्तु इस के बावजूद सुन्नत और हदीस की आवश्यकता है और इस से पवित्र क़ुर्आन की सम्पूर्णता में दोष पैदा नहीं होता।

पवित्र क़ुर्आन की वाग्मयता

(32) पवित्र क़ुर्आन जो फसीह (सारगर्भित) होने का दावा करता है। इस का क्या अर्थ है और यह कि वह किस प्रकार अनुपम है और क्यों कोई उस जैसी दूसरी क़िताब नहीं ला सकता।

पवित्र क़ुर्आन का दूसरी इल्हामी पुस्तकों से मुक़ाबला

(33) क़ुरआन और दूसरी पुस्तकों की शिक्षा का मुक़ाबला भी ज़रूरी है।

एक अनुपम आध्यात्मिक, शारीरिक, सभ्याचारिक और राजनीतिक क़ानून

(34) संक्षिप्त रूप से इस बात पर बहस करना भी आवश्यक है कि पवित्र क़ुर्आन अनुपम रुहानी, जिस्मानी, सामाजिक और राजनीतिक क़ानून है।

पवित्र क़ुर्आन के रूपक

(35) पवित्र क़ुर्आन में रूपक क्यों आए हैं। उनकी क्या आवश्यकता है। ये प्रश्न भी समाधान योग्य है।

क़ुरआन के अनुवाद की ज़रूरत

(36) यह भी कि क़ुरआन को अनुवाद के साथ प्रकाशित करना क्यों ज़रूरी है।

क़ुरआन की हिफ़ाज़त के माध्यम

(37) पवित्र क़ुर्आन की हिफ़ाज़त का जो दावा किया गया है इस पर बहस करना ज़रूरी है कि इस दावा के लिए क्या माध्यम अपनाए गए हैं।

पवित्र क़ुर्आन को शेअर (पद्य) क्यों कहा गया है

(38) पवित्र क़ुर्आन को जो उस ज़माना के लोगों ने कहा कि यह एक शायर का कलाम है और पवित्र क़ुर्आन ने इस का खण्डन किया है (सूरह अल्हक़्क़ा-42) इस का क्या अर्थ है। अर्थात क़ुरआन में शेअर का क्या अर्थ है। और जब ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन के सम्बन्ध में कहता है कि यह किसी शायर का कलाम नहीं तो इस का क्या अर्थ है।

पवित्र क़ुर्आन थोड़ा-थोड़ा क्यों अवतरित हुआ

(39) यह बहस भी ज़रूरी है कि पवित्र क़ुर्आन टुकड़े टुकड़े कर के क्यों अवतरित हुआ। क्यों ना एक ही बार अवतरित हो गया।

पवित्र क़ुर्आन का कोई अनुवाद उस के सारे विषयों पर हावी नहीं हो सकता

(40) यह सिद्ध करना भी ज़रूरी है कि पवित्र क़ुर्आन का कोई अनुवाद उस के सारे विषयों पर हावी नहीं हो सकता।

पवित्र क़ुर्आन के समस्त शब्द इल्हामी हैं

(41) यह बहस भी ज़रूरी है कि पवित्र क़ुर्आन के वही शब्द हैं जो ख़ुदा तआला ने अवतरित किए या मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में जो विचार आया, उसे आपने अपने शब्दों में लिखवा दिया?

यूरोप इस दूसरे रूप को सिद्ध करने के लिए बड़ा ज़ोर लगाता है। कारण यह कि इंजील की प्रतियों में चूँकि मतभेद है। इसलिए वे कहते हैं कि शब्द इल्हामी नहीं बल्कि अर्थ इल्हामी है। यदि शब्द में मतभेद है तो कोई आपत्ति नहीं। कहते हैं किसी गीदड़ की पूंछ कट गई थी। उसने सब गीदड़ों को जमा कर के तहरीक की कि हर एक को अपनी पूंछ कटवा देनी चाहिए। उसने पूंछ के कई एक हानियां बताईं। कई गीदड़ उस के लिए तैयार हो गए। परन्तु एक बूढ़े गीदड़ ने कहा कि पहले पूंछ कटाने की तहरीक करने वाला उठ कर दिखाए कि इस की अपनी पूंछ है या नहीं। यदि उस की पूंछ पहले ही कटी हुई है तो मालूम हुआ कि वह सबको अपने जैसा बनाना चाहता है। यही हालत यूरोप वालों की है। उनकी इंजीलों में चूँकि मतभेद पाया जाता है। इसलिए वे क़ुरआन के सम्बन्ध में भी यह सिद्ध करना चाहते हैं कि इस के शब्द इल्हामी नहीं।

पवित्र क़ुर्आन हर किस्म की शैतानी मिलावट से पवित्र है

(42) यह भी एक प्रमुख प्रश्न है कि पवित्र क़ुर्आन में कोई शैतानी कलाम भी शामिल हो सकता है या नहीं? इस प्रश्न का सामान मुसलमानों ने ही उपलब्ध कराया है क्योंकि वे कहते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बान पर नऊज़ु बिल्लाह कुछ शैतानी वाक्य जारी हो गए थे जिनके सम्बन्ध में जिब्रील अलैहिस्सलाम ने बताया कि यह ख़ुदा तआला की ओर से नहीं। यूरोपियन लोग कहते हैं विरोधियों को ख़ुश करने के लिए आप (स) ने कुछ वाक्य कहे थे परन्तु बाद में उन पर पछताए और कह दिया कि मन्सूख़ (स्थगित) हो गए हैं। इस आरोप को भी ग़लत सिद्ध करना है।

पवित्र क़ुर्आन के मुख़ातब (सम्बोधित) कौन थे?

(43) एक यह भी प्रश्न है कि पवित्र क़ुर्आन के सम्बोधित कौन लोग थे। केवल अरब वाले या सारी दुनिया के लोग? और फिर यह भी कि शुरू में केवल अरब वाले सम्बोधित थे और बाद में अन्य लोग या सब के सब शुरू से ही सम्बोधित थे।

पवित्र क़ुर्आन का शाब्दिक अनुवाद होना चाहिए अथवा मुहावरा के साथ?

(44) फिर यह भी एक प्रश्न है कि पवित्र क़ुर्आन का अनुवाद शाब्दिक हो या मुहावरा के साथ? आम तौर पर लोग शाब्दिक अनुवाद पसंद करते हैं, परन्तु इस तरह अरबी की समझ आती है, अर्थ समझ में नहीं आता। कारण यह कि शब्द के नीचे शब्द होता है। इस से यह तो मालूम हो जाता है कि ऊपर के अरबी शब्द का अनुवाद यह

है, परन्तु सारे वाक्य का अर्थ समझ में नहीं आता। क्योंकि दोनों भाषाओं के शब्दों के प्रयोग में अन्तर है। शाब्दिक अनुवाद करना ऐसी ही बात है जैसे उर्दू में कहते हैं अमुक की आँख बैठ गई। इस का अंग्रेज़ी में अनुवाद करने वाला यदि यह अनुवाद करे कि HIS EYE HAD SAT" और अरबी में यह करे कि "जलसत् ऐनहु" तो साफ़ ज़ाहिर है कि यह शाब्दिक अनुवाद मूल भाव को प्रकट नहीं करेगा। क्योंकि आँख बैठने का जो भाव उर्दू में है वह दूसरी भाषाओं के शाब्दिक अनुवाद में नहीं पाया जाता। अनुवाद का उद्देश्य चूँकि अर्थ समझाना है इसलिए ऐसा होना चाहिए कि अर्थ समझ में आ जाए, चाहे मुहावरा बदलना पड़े।

यह प्रश्न हैं जिन पर क़ुरआन की प्रस्तावना में बहस की आवश्यकता है। इरादा है कि यदि अल्लाह तआला चाहे तो उन विषयों पर बहस करूँ

पवित्र क़ुर्आन पर यूरोप के पाश्चात्यविदों का हमला

अब मैं जमाअत को यह बताता हूँ कि पवित्र क़ुर्आन की सेवा एक प्रमुख सेवा है। यूरोपीयन क़ौमों का इस्लाम के ख़िलाफ़ जिस बात पर सबसे ज़्यादा ज़ोर है वह यही है कि पवित्र क़ुर्आन के महत्व को गिराया जाए। अतः नोल्डके जो जर्मनी का एक मशहूर लेखक और इस्लाम का बहुत बड़ा दुश्मन है और यूरोप में अरबी भाषा का बहुत बड़ा माहिर समझा जाता है उसने इन्साईक्लो पीडिया ब्रिटेनिका में लिखा है कि पवित्र क़ुर्आन में गलतियां और दोष सिद्ध करने के लिए यूरोपीयन लेखकों ने बड़ा ज़ोर लगाया है परन्तु वे अपनी कोशिश में असफल रहे हैं। (The Encyclopaedia Britannica Vol 15th P.905 Published 1911 ई) मानो स्वयं स्वीकार करता है कि यूरोपियन लेखकों ने पवित्र क़ुर्आन के विरुद्ध बड़ा ज़ोर लगाया है। परन्तु सबसे बढ़कर पवित्र क़ुर्आन के ख़िलाफ़ ख़तरनाक कोशिश एक पुस्तक है जो इस समय मेरे हाथ में है और जिसका नाम है। "तीन पुराने क़ुरआनों के पृष्ठ" एक औरत ने जो डाक्टर आफ़ फ़िलासफ़ी है यह पुस्तक लिखी है और उसने वर्णन किया है कि वह मिस्र में गई। जहां उसने एक पुस्तक ख़रीदी जो ईसाई पुस्तकों की नक़ल थी। जब उस के पृष्ठों पर कुछ दवाइयां लगाई गईं तो नीचे से अन्य शब्द प्रकट हो गए। डाक्टर मंगाना ने इस के सम्बन्ध में बताया कि यह एक पुराना क़ुरआन है जिसके देखने से मालूम हुआ कि इस में और वर्तमान क़ुरआन में अन्तर है। वह कहते हैं इस से साफ़ मालूम होता है कि क़ुरआन बिगड़ चुका है

वह इस का सबूत इस तरह पेश करते हैं कि हज़रत उसमान रज़ि ने जब क़ुरआन नक़ल किया तो बाक़ी क़ुरआनों को जला दिया। चूँकि उनमें जो कुछ लिखा था उसे कोई नक़ल न कर सकता था। इसलिए उस वक़्त ईसाइयों ने ज़ाहिर में अपने धर्म की एक पुस्तक लिखी परन्तु वास्तव में ख़ुफ़िया रूप से उस में वह क़ुरआन नक़ल किया जिसे जलाने का हुक्म दे दिया गया था। अब कुछ दवाईयां लगाने से गुप्त रूप से लिखा हुआ क़ुरआन प्रकट हो गया है।

यह एक निहायत ख़तरनाक चाल है जो चली गई। इस पुस्तक का पुराना काग़ज़ दिखाया जाता है। इस पर पुरानी तहरीरें दिखाई जाती हैं और उनसे विभिन्न प्रकार की शंकाएं की जाती हैं।

(क़ुर्आन की विशेषताएं भाग-1, पृष्ठ 1-27)

☆ ☆ ☆

ख़ुद्दाम के नाम
हुज़ूर अनवर ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का पैग़ाम

(सालाना इजतेमा मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत अक्टूबर 2022 के अवसर पर)

بسم الله الرحمن الرحيم

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ وَ عَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

خدا کے فضل اور رحم کے ساتھ

ھوالنّاصر

واجعل لي من لدنك سلطانا نصيرا
إنا فتحنا لك فتحا مبينا
ولقد نصركم الله ببدر وأنتم أذلة
امام جماعت احمدیہ

اسلام آباد یوکے

प्यारे मेंबरान मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत को अपना सालाना इज्तेमा आयोजित करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। मुझसे इस अवसर पर संदेश भिजवाने का निवेदन किया गया है। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला इसे हर लिहाज़ से सफ़ल और बाबरकत करे और ख़ुद्दाम और अत्फ़ाल पर इसके नेक परिणाम प्रदर्शित करे। आमीन

याद रखें कि एक विशेष वातावरण में केवल धार्मिक उद्देश्यों के लिए इकट्ठा होना, अल्लाह तआला को याद करने के लिए इकट्ठा होना, उस के क़ुर्ब (सानिध्य) की प्राप्ति के लिए इकट्ठा होना निस्संदेह अल्लाह तआला के फ़ज़लों को खींचता है। ऐसे अवसरों पर सम्मिलित होने वालों को चाहिए कि जो नेक बातें सुनें उन पर अमल भी करें। नेकी (शुभ कर्मों) और तक़्वा (संयम) को अपनी पहचान बनाएँ। दीन (धर्म) को दुनिया पर प्राथमिक रखें और ख़िलाफ़त से संबंध और निष्ठा में और अधिक उन्नति करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार जमाअत को तक़्वा (संयम) की शिक्षा दी है। आपने हमें ख़ुदा तआला के सानिध्य को प्राप्त करने के लिए तक़्वा पर चलने का उपदेश देते हुए फ़रमाया है कि तक़्वा समस्त पुराने पवित्र ग्रन्थों का निष्कर्ष है। इस बारे में आप अपने एक इल्हाम का वर्णन करते हुए बयान फ़रमाते हैं कि :

"बहुत बार ख़ुदा की ओर से इल्हाम हुआ कि तुम लोग मुत्तक़ी (संयमी) बन जाओ और तक़्वा की बारीक राहों पर चलो तो ख़ुदा तुम्हारे साथ होगा।" फ़रमाया: "इस से मेरे हृदय में अत्यंत पीड़ा उत्पन्न होती है कि मैं क्या करूँ कि हमारी जमाअत सच्चा संयम और पवित्रता अपना ले।" फिर फ़रमाया कि: "मैं इतनी दुआ करता हूँ कि दुआ करते करते कमज़ोरी हो जाती है और कई बार बेहोशी और मरने तक नौबत

पहुंच जाती है।" फ़रमाया "जब तक कोई जमाअत ख़ुदा तआला की निगाह में मुत्तक़ी न बन जाए ख़ुदा तआला की सहायता उसके साथ नहीं हो सकती।" फ़रमाया: "तक़्वा निष्कर्ष है समस्त पुराने पवित्र ग्रन्थों और तौरेत और इंजील की शिक्षाओं का। पवित्र क़ुरआन ने एक ही शब्द (अर्थात तक़्वा के शब्द) में ख़ुदा तआला की महान इच्छा और पूर्ण प्रसन्नता का प्रकटन कर दिया है"। फ़रमाया: "मैं इस चिंता में भी हूँ कि अपनी जमाअत में से सच्चे मुत्तक़ियों, दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वालों और दुनिया को पीछे छोड़ कर अल्लाह की ओर जाने वालों को अलग करूँ और कुछ धार्मिक कार्य उनके सपुर्द करूँ और फिर मैं दुनिया के दुख तथा पीड़ाओं में ग्रस्त रहने वालों और रात-दिन भौतिक दुनिया ही की इच्छा में जान खपाने वालों की कुछ भी परवाह न करूँगा।" (मल्फ़ूज़ात जिल्द प्रथम, पृष्ठ 303)

अत: यह पीड़ा है आपकी कि मेरी जमाअत का प्रत्येक व्यक्ति ऐसा हो जो तक़्वा पर चलने वाला हो, न यह कि केवल दुनिया का दुख ही उसे हर समय खाता रहे।

यह भी याद रखें कि हमारे इज्तिमाओं का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्य ख़िलाफ़त की बरकतों का वर्णन करना और जमाअत के लोगों के दिलों में ख़िलाफ़त से संबंध और वफ़ा को और अधिक उजागर और मज़बूती से स्थापित करने का प्रयास करना है। ख़िलाफ़त निस्संदेह अल्लाह तआला की ओर से एक महान इनाम है जो अंतिम युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्यारी जमाअत को मिला है। इसलिए हम सब का यह कर्तव्य बनता है कि अल्लाह की इस रस्सी को मज़बूती के साथ थाम लें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हो फ़रमाते हैं :

"तुम ख़ूब याद रखो कि तुम्हारी तरक्कियाँ ख़िलाफ़त के साथ संबंधित हैं और जिस दिन तुमने इस को न समझा और इसे क़ायम न रखा वही दिन तुम्हारी मृत्यु और विनाश का दिन होगा लेकिन यदि तुम इस की वास्तविकता को समझते रहोगे और इसे क़ायम रखोगे तो फिर यदि सारी दुनिया मिलकर भी तुम्हारा विनाश करना चाहेगी तो नहीं कर सकेगी।"

अल्लाह तआला आपको इस इज्तिमा से भरपूर लाभ प्राप्त करने का सामर्थ्य प्रदान करे और आप में से हर एक को उन समस्त बरकतों को समेटने वाला बनाए जो इस इज्तिमा से संबंधित हैं और हम सब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उन दुआओं के वारिस बनें जो आप ने ऐसी बाबरकत मज्लिसों में सम्मिलित होने वालों के लिए और अपनी जमाअत के लोगों के लिए कीं हैं।

वस्सलाम
ख़ाकसार
मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हम सभी अहमदी नौजवानों को हमारे ख़लीफ़ा ने निर्देशानुसार पालन करने का सामर्थ्य प्रदान करे और हमें देश का एक अच्छा नागरिक बनाए। आमीन (संपादक)

एक काव्य रचना

कहते हैं कोई आता नज़र राहबर(मार्गदर्शक) नहीं
उतरा जो आसमान से उस की ख़बर नहीं

जिसको निगाहें ढूंढती फिरती थीं हर तरफ़
हैरत है उसकी सिम्त, किसी की नज़र नहीं

जलते हैं यूंही अब भी खड़े सख़्त धूप में
साया जो दे, नज़र उन्हें आता शजर(वृक्ष) नहीं

मिंबर पे चढ़ के बोलते बारीश(दाढ़ीवाले) हैं कई
सोचें तो उनके वुअज़(उपदेश) में क्योंकर असर नहीं

आए भी कैसे रास्ता सच्चाई का नज़र
ख़ुद अपने आपसे हुए मुख़लिस अगर नहीं

पहचानती है फ़ितरत-ए-इन्सान फ़र्क़ को
बातिल(झूठ) से हक़्क़(सत्य) को मात दे ऐसा हुनर नहीं

फल खाएं नीचे जो हैं शजर(वृक्ष) साया-दार के
जो दूर हैं नसीब में उनके समर(फल) नहीं

तारिक़ ख़ुदा के फ़ज़्ल से ही रहनुमाई हो
आसान वर्ना ढूंढना सीधी डगर नहीं

(डाक्टर तारिक़ अनवर बाजवा। लंदन)

Asifbhai Mansoori 9998926311
Sabbirbhai 9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है (5)

लेखक - आसिफ महमूद बासित साहिब **(भाग – 25)** अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

और फिर जब एक सदी से अधिक समय इस बात का गवाह हो कि ख़लीफ़तुल मसीह के साथ क़दम बढ़ाने ही में भलाई है, तो कौन चाहेगा कि अपनी अक़्ल और अपनी अटकल के बलबूते पर जूआ खेलता फिरे।

हुज़ूर अनवर की दूरदर्शिता की धारा जिस दिशा और जिस ऊंचाई पर चलती है, इस के अनुमान का मुझे ही नहीं, किसी को भी दावा नहीं करना चाहिए कि हम सब एक निचाई से दुनिया को देखते हैं। परंतु जो कुछ अवलोकन में आया उसे प्रस्तुत करता हूँ।

वस्तुत: विषय की ओर आने से पहले ऊपर बयान होने वाली घटना का कुछ विवरण कर देना ज़रूरी है। यह तो बता दिया कि हुज़ूर अपने सामने रखे पत्रों के अंबार से गुज़र रहे होते हैं और इस के बावजूद टीवी पर चलने वाले प्रोग्राम के छोटे-छोटे भागों तक से अवगत होते हैं, परंतु यहां यह बताना ज़रूरी है कि हुज़ूर पत्रों में से सरसरी नहीं गुज़र जाते। यह भी नहीं कि सिर्फ दस्तख़त कर रहे होते हैं। हुज़ूर साथ बात सुनते जाते हैं, प्रोग्राम कोई देखने के लिए प्रस्तुत हुआ हो तो वो भी चलता रहता है, साथ पत्र देखते रहते हैं। पत्रों को देखने का जो दृश्य मैंने देखा है वह यह है कि खुलासों के अतिरिक्त प्रस्तुत होने वाले पत्रों का विषय हुज़ूर स्वयं पढ़ते और ज़रूरत हो तो इस पर निर्देश देते हैं। निजी पत्रों में से जिनका सार प्रस्तुत होता है, इस पर हुज़ूर के नोट के अनुसार जो अब दफ़्तर प्राईवेट सेक्रेट्री ने तैयार किया होता है। परंतु जब यह ज़ाती ख़त दस्तख़त होने के लिए हुज़ूर के पास आता है, तो असल पत्र उस के साथ संलग्न होता है। इन शुभ पलों में जो हुज़ूर के क़दमों में प्राप्त होते हैं, उनमें सैंकड़ों नहीं हज़ारों पत्रों में से गुज़रते हुज़ूर को देखने का मौक़ा मिला है। और हज़ारों बार का अवलोकन है कि हुज़ूर कई बार असल ख़त जो साथ संलग्न होता है, उसे देखते और फिर उत्तर को देख कर दस्तख़त करते हैं। और यह भी सैंकड़ों दफ़ा देखा कि जहां कोई तबदीली दरकार हो, वो ख़त पर लिखते हैं जिसके अनुसार परिवर्तन हो कर दोबारा प्रस्तुत होता है। जो कुछ हुज़ूर अपने दस्तख़त के साथ किसी भी अहमदी को, ज़ाती या इंतिज़ामी तौर पर, तहरीर फ़रमाते हैं, वह तारीख़ का हिस्सा बनने जा रहा होता है। हुज़ूर हर शब्द को बारीकी से पढ़ते हुए साथ-साथ विभिन्न काम जारी रखते हैं। यह योग्यता अल्लाह तआला की ओर से एक ज़माने में एक व्यक्ति को ही मिल सकती है, और वह एक व्यक्ति इस ज़माना में हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हैं। अल्लाह का हज़ार-हज़ार शुक्र कि हमने यह ज़माना पाया और ख़ुदा के चयनित को अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से सुना।

अब वापस इस बात की ओर आते हैं कि हम क्या सोचते हैं और वहां दूरदर्शिता का दरिया किन चोटियों को पार करता, किन मैदानों से गुज़रता और किन समुद्रों की ओर रवाँ-दवाँ होता है।

प्रोग्राम अलहवारुल मुबाशर एम०टी०ए का पहला प्रोग्राम था जिसमें दर्शकगणों को लाईव प्रश्न पूछने का मौक़ा मिला। अहमदी, ग़ैर अहमदी सभी को यह मौक़ा प्राप्त हुआ कि जमात अहमदिया की आस्थाओं को समझने के लिए लाईव प्रश्न पूछ लें। यह प्रोग्राम एम०टी०ए के इतिहास का एक बहुत बड़ा break through था। हुज़ूर अनवर के हाथ का लगाया हुआ पौधा था, सो अल्लाह-तआला ने इस प्रोग्राम के लिए अरब दुनिया के दिलों में बहुत मक़बूलियत पैदा फ़रमाई।

इस प्रोग्राम के आरंभ होने पर और इस के बाबरकत परिणाम देखने पर दर्शकों की ओर से मांग होने लगी कि उर्दू भाषा में भी ऐसा प्रोग्राम प्रस्तुत किया जाए। दर्शकों की राए एम०टी०ए के लिए हमेशा बहुत महत्वपूर्ण रही हैं। अत: इन रायों को जब भी ज़ेर-ए-ग़ौर लाया गया, इंतिज़ामीया का यही ख़्याल रहा कि उर्दू और पंजाबी मिज़ाज के हामिल नाज़रीन जब काल करेंगे तो जाने क्या कह बैठें और लाईव ऐसे सवालों को सँभालना मुश्किल न हो जाए। लिहाज़ा ऐसे किसी प्रोग्राम को संभावनाओं से बाहर ख़्याल किया जाता रहा। दर्शकों की इस मांग से हुज़ूर अनवर भी अवगत थे।

इन दिनों एम०टी०ए पर ख़बर में तो प्रस्तुत की ही जाती थीं परंतु हुज़ूर अनवर ने विनीत को आदेश दिया कि जमात अहमदिया पर होने वाले अत्याचारों पर एक माहवार रिपोर्ट ख़बरों के रूप में प्रस्तुत की जाए। आदेश की पालना में Persecution न्यूज़ का आरंभ किया गया। क्षमा कीजिए कि इस शब्द persecution का कोई उर्दू पर्याय नहीं, हालाँकि यह अत्याचार सबसे अधिक उस देश में प्रचलित है जिसकी क़ौमी ज़बान उर्दू है। विनीत के साथ मुहतरम आबिद वहीद ख़ान साहब और मुहतरम मशहूद इक़बाल साहिब और कभी मुहतरम दाऊद ख़ान साहब चर्चा में सम्मिलित होते। दर्शकों की ओर से इस प्रोग्राम को बहुत सराहा गया। अभी इस प्रोग्राम को शुरू हुए कुछ ही अवधि गुज़री थी कि पाकिस्तान के एक निजी टैलीविज़न चैनल पर एक तथाकथित धार्मिक विशेषज्ञ ने एक प्रोग्राम प्रस्तुत किया और उस में विभिन्न फ़ुक़हा से जमात अहमदिया से ताल्लुक़ रखने वालों को वाजिबुल क़तल क़रार दिलवाया। पाकिस्तान के समान्यतया बे-हिस समाज में यदि कोई संवेदन शीलता शेष रह गई है तो वह जमात अहमदिया से दुश्मनी और इस से जुड़ी हुई संवेदना है। सामान्य जनता को तो जैसे इस फ़तवा का इंतिज़ार था। कुछ ही दिन में सिंध में दो अत्यंत वृद्ध अहमदियों को शहीद कर दिया गया। उनमें से एक जनाब अबदुल मन्नान सिद्दीक़ी साहिब थे जो पेशा से डाक्टर थे और दिन-रात ग़रीब मरीज़ों के ईलाज में व्यस्त रहते थे। उन्हें भी इस फ़तवा के प्रकाशित होते ही शहीद कर दिया गया।

(पृष्ठ- 3 से 5)

☆ ☆ ☆

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

सिलसिला अहमदिया (अर्थात अहमदियत का परिचय) जिल्द-1

(लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब M.A.)

(भाग-34) अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

इन संदर्भों तथा इसी प्रकार के बहुत से दूसरे हवालों से दो बातें सिद्ध होती हैं।

प्रथम यह कि चाहे पहले समय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने बारे में नबुव्वत और रिसालत की तावील (अर्थात व्याख्या) करते थे परंतु बाद में जब ख़ुदा ने आप पर सच्चाई खोल दी तो आपने खुले तौर पर रिसालत और नबुव्वत का दावा किया।

द्वितीय यह कि आपका यह दावा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और इस्लाम से आज़ाद हो कर नहीं था बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शागिर्दी और ग़ुलामी में हो कर और इस्लाम के अनुकरण में बरूज़ी (अर्थात प्रतिरूप) तौर पर दावा था। और इस दावा को आप, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़त्म-ए-नबुव्वत के ख़िलाफ़ नहीं समझते थे बल्कि अपनी नबुव्वत को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नबुव्वत का हिस्सा और ज़िल क़रार देते थे। मुझे इस बात में ज़्यादा व्याख्या की इसलिए आवश्यकता पड़ी है क्योंकि ग़ैर तो ख़ैर एतराज़ करते ही थे बदक़िस्मती से अहमदी कहलाने वालों में से भी एक हिस्सा ऐसा पैदा हो गया है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आरंभिक व्याख्याओं के आधार पर आपके दावा-ए-नुबूव्वत का मुनकिर है और ग़ैर अहमदियों की तरह उसे आयत ख़ातमुन्नबिय्यीन के विरुद्ध समझता है। यद्यपि जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार व्याख्या की है जिस प्रकार की नबुव्वत के आप मुद्दई हैं यानी ज़िल्ली और बरूज़ी नबुव्वत वह हरगिज़ हरगिज़ आयत ख़ातमुन्नबिय्यीन के ख़िलाफ़ नहीं।

मैं अपने ग़ैर अहमदी पाठकों के लिए इस जगह यह बात भी स्पष्ट करना चाहता हूँ कि यह ख़्याल करना कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नबुव्वत का दरवाज़ा खुलने से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपमान होता है एक अत्यंत ही मूर्खतापूर्ण और निम्न स्तरीय विचार है और यह ख़्याल केवल उन्हीं लोगों के दिल में पैदा होता है जिन्हों ने इस मामले में बिलकुल कोई ग़ौर नहीं किया और सिर्फ सुनी सुनाई बातों पर फ़तवा लगा दिया है। ज़ाहिर है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपमान सिर्फ इस सूरत में समझा जा सकता है कि कोई व्यक्ति आपकी लाई हुई शरीअत को रद्द करे या आपसे आज़ाद हो कर स्थायी नबुव्वत का मुद्दई बने। मगर यहां ये दोनों बातें नहीं हैं। बल्कि यहां तो सिर्फ यह दावा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शरीअत की अधीनता में और आपकी शागिर्दी और ग़ुलामी के जूए के नीचे हो कर ख़ुदा ने नबुव्वत की श्रेणी प्रदान की है और एक तुच्छ बुद्धि का आदमी भी ख़्याल कर सकता है कि यह सूरत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त और आपके मुक़ाम को बढ़ाने वाली है न कि कम करने वाली। नबुव्वत क्या है? नबुव्वत एक उच्च आध्यात्मिक श्रेणी है जिसमें ख़ुदा अपने बंदे के साथ अधिकता से वार्तालाप करता और उसे भविष्य की

ख़बरों की सूचना देता और दुनिया की ओर उसे रसूल बना कर भेजता है। अब ग़ौर करो कि क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त इस में है कि आपके बाद आपके मानने वालों में इस रुहानी इनाम का सिलसिला बंद हो जाए या कि आपकी इज़्ज़त इस में है कि आपके फ़ैज़ से यह सिलसिला पहले से भी बढ़-चढ़ कर जारी रहे। वास्तव में सारा धोखा इस बात से लगा है कि नबुव्वत के अर्थों के बारे में ग़ौर नहीं किया गया और हर नबी के लिए यह ज़रूरी समझा गया है कि वो कोई नई शरीअत लाए या कम से कम अपने पूर्व नबी से आज़ाद हो कर फ़ैज़-ए-नबुव्वत पाए हालाँकि नबी के लिए यह दोनों बातें लाज़िमी नहीं और जब यह बातें लाज़िमी नहीं तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नबुव्वत का दरवाज़ा खुला रखने में आपका अपमान नहीं बल्कि इस दरवाज़े के बंद करने में अपमान है। मैं तो यह ख़्याल करता हूँ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इन महान उपकारों में से जो आपने इस्लाम पर अपितु दुनिया पर किए हैं सबसे भारी उपकार ये दो हैं :

प्रथम यह कि आपने क़ुदरत की तरह कुरआन के ज्ञानों को असीमित बता कर इस्लाम के ज्ञान संबंधी विभाग में एक असामान्य विकास और उन्नति का द्वार खोल दिया है और उन एतराज़ करने वालों का मुँह-बंद कर दिया है जो इस ज़माने की भौतिक उन्नति को देख कर यह कहते हैं कि तुम हमें चौदह सौ साल पीछे ले जाना चाहते हो। और आपने सिर्फ यह दावा ही नहीं किया बल्कि व्यावहारिक रूप से क़ुरआन की नई व्याख्या प्रस्तुत कर के यह सिद्ध कर दिया है कि इस के अंदर वर्तमान युग के हर एतराज़ का उत्तर और हर विष का विषहर उपस्थित है।

द्वितीय आपने ख़त्म-ए-नबुव्वत की सही और सच्ची व्याख्या कर के मुस्लमानों की गर्दनों को बुलंद कर दिया है और दुनिया पर यह साबित कर दिया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा की रहमत के दरवाज़े को तंग करने के लिए नहीं आए बल्कि विस्तृत करने के लिए आए हैं और यह कि आपके अनुयायियों के लिए हर किस्म के रुहानी इनाम का दरवाज़ा खुला है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक शेर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संबोधित कर के फ़रमाते हैं :

हम हुए ख़ैर-ए-उमम तुझसे ही ए ख़ैर-ए-रुसुल
तेरे बढ़ने से क़दम आगे बढ़ाया हमने

अफ़सोस कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इन अज़ीमुश्शान एहसानों को दुनिया ने आज नहीं पहचाना मगर वक़्त आता है कि वो उन्हें पहचानेगी और अपनी अक़ीदत के फूल आपके क़दमों पर रखकर आप पर दुरूद और सलाम भेजेगी । मगर जैसा कि आपने ख़ुद लिखा है इस वक़्त का ईमान इस तल्ख़ी को भी अपने साथ लाएगा जो किसी शायर ने अपने इस शेअर में बयान की है कि :

जब मर गए तो आए हमारे मज़ार पर
पत्थर पड़ें सनम तेरे ऐसे प्यार पर

(सिलसिला अहमदिया पृष्ठ 110-112)

☆ ☆ ☆

साइंस से जुड़े कुछ रोचक तथ्य (गूगल के माध्यम से)

*दुनिया में सबसे ज्यादा कठोर धातु प्लैटिनम है।

*वातावरण में जितनी भी ऑक्सीजन पाई जाती है, उसका 20 प्रतिशत हिस्सा अमेजन के जंगल से प्राप्त होता है।

*उड़ने वाले गुब्बारों में हीलियम गैस भरी जाती है, क्योंकि यह वायु से भी हल्की होती है। हीलियम का प्रयोग हवाई जहाज के टायर में भी किया जाता है।

*हथेली पर रखने भर से गैलियम नामक पदार्थ पिंघल जाता है, क्योंकि यह तापमान के प्रति बहुत संवेदनशील होता है।

*पेट में ऐसा एसिड पाया जाता है, जो स्टील को भी गला सकता है।

*तांबे यानी कॉपर पर बैक्टीरिया नहीं लग सकते हैं।

*मानव शरीर में बड़ी मात्रा में कार्बन पाया जाता है, इतना कि इससे 9 हजार ग्रेफाइट की पेंसिल बनाई जा सकती है।

*हीरा एसिड में नहीं पिंघलता है।

*ऑक्सीजन का रंग नीला होता है और इसे तरल व ठोस अवस्था में ही देखा जा सकता है।

*हवाई जहाज में भोजन कम स्वादिष्ट लगता है, क्योंकि ऊंचाई पर सूंघने और टेस्ट करने की क्षमता में थोड़ी कमी आ जाती है।

*शहद 300 साल तक खराब नहीं होता है।

*मैकडोनाल्ड प्रत्येक सेकंड में 75 बर्गर बेचता है।

*शहद बहुत जल्दी पच जाता है, क्योंकि मधुमक्खी इसे पहले ही पचा देती हैं।

*मिल्क शेक में सबसे ज्यादा कैलोरी पाई जाती है।

*नारियल पानी को आपातकाल में ब्लड प्लाज्मा की जगह इस्तेमाल किया जा सकता है।

*अगर सिरके में मोती को डाला जाए, तो वो पिघल जाएगा।

*नींबू दुनिया का सबसे गुणकारी फल है।

*1995 में अंतरिक्ष में सबसे पहले आलू उगाया गया था।

पानी से जुड़े मज़ेदार तथ्य

*पानी न सिर्फ दुनिया के समस्त प्राणियों की जरूरत है, बल्कि यह धरती के भूगोल और वातावरण में बड़ी

*भूमिका रखता है। इसके बारे में कुछ अनसुने फैक्ट्स नीचे दिए जा रहे हैं।

*दुनिया का 1.7% पानी जम गया है और इसलिए यह इस्तेमाल के लिए बेकार है।

*संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रतिदिन लगभग 40,000 करोड़ गैलन पानी का उपयोग किया जाता है।

*अमेरिकियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पानी का लगभग आधा हिस्सा थर्मोइलेक्ट्रिक बिजली उत्पादन के लिए उपयोग किया जाता है। * दुनिया में 78 करोड़ लोगों के पास अच्छे जल स्रोत की कमी है।

☆ ☆ ☆

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ
الثَّمَرٰتِ ۗ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ (النحل 11)
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO JUICEPAK
Marie
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

R
REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal.com
flipkart.com
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

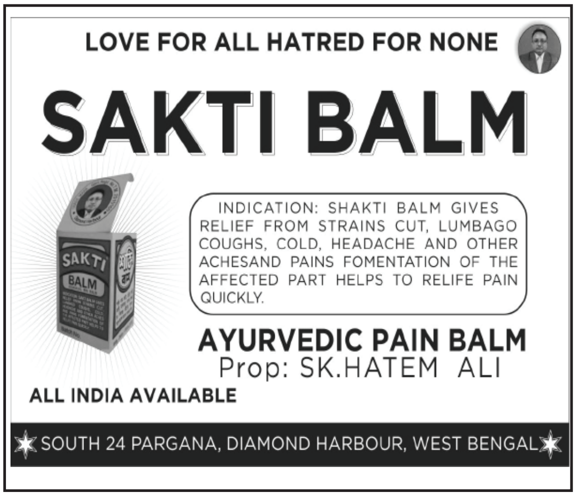
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
SAKTI BALM
INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.
AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI
ALL INDIA AVAILABLE
SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
RSB Traders & whole seller
Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items
Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18
Mob: 9647960851
9082768330

INDIA MOVES ON EXIDE
EXIDE
M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)
Cell :9440996396,9866531100

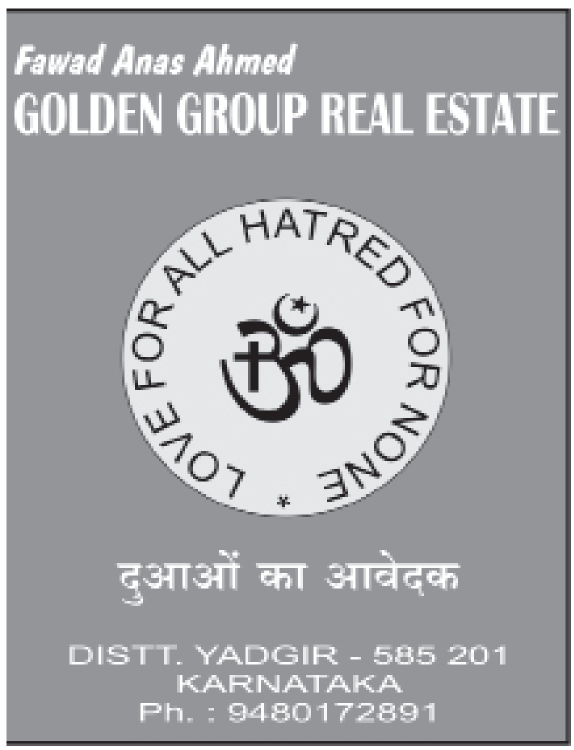
Fawad Anas Ahmed
GOLDEN GROUP REAL ESTATE
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
दुआओं का आवेदक
DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS
YUBA
QUALITY FOOTWEAR
E-mail:yuba.metro@yahoo.com
{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}
H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH :2328-1016

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Is Allah not sufficient for His servant

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone, Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

ان ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ۔ انه كان بعباده خبيرا بصيرا ○

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

कलमा तक न जानने वाले मुसलमान

हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ि० फरमाते हैं : "आम लोगों की हालत यहां तक पहुंच गई है कि कलमा तक नहीं जानते। पहले सुना करते थे कि ऐसे भी मुसलमान हैं जो कलमा भी नहीं जानते। किंतु सिलसिला अहमदिया मैं दाख़िल करते समय, क्योंकि कलमा पढ़ाया जाता है, इसलिए इस बात की पुष्टि हो गई बीसियों मर्द और औरतें ऐसे आते हैं जिन्हें कलमा एक-एक शब्द करके पढ़ाना पड़ता है। एक पठान का क़िस्सा सुना करते थे कि उसने एक हिंदू को पकड़ लिया और कहा पढ़ कलमा। हिंदू ने कहा मैं कलमा जानता नहीं क्या पढ़ूँ। पठान ने कहा पढ़ नहीं तो मार दूंगा अंततः उसने मजबूर होकर कहा कि अच्छा पढ़ाओ पढ़ता हूँ। पठान ने कहा स्वयं पढ़। हिंदू ने कहा मैं जानता नहीं पढ़ूं क्या। पठान ने कहा मालूम होता है तुम्हारी क़िस्मत ख़राब है नहीं तो आज तू मुसलमान हो जाता। कलमा मुझे भी नहीं आता। मैं इसको एक चुटकुला समझता था और अब भी समझता हूँ कि शायद यह घटना न हो बल्कि मुसलमानों की हालत का नक़्शा खींचने के लिए यह कहानी बनाई गई हो। किंतु बीसियों की संख्या में मर्द और औरतें मैंने ऐसे देखे हैं जो मेरे कहने के बावजूद कलमे के शब्द दोहरा नहीं सकते। यह हालत है इस्लाम की और उस इस्लाम की जो ऐसा आकर्षण रखता था कि उसने वहशियों और जाहिलों को राजनीतिज्ञ और शासक बना दिया। उसके मानने वालों का आज यह हाल है कि एक छोटा सा कलमा भी नहीं पढ़ सकते। राजपूताना और अलीगढ़ के पास-पास ऐसे देहात हैं जहां लोग कहलाते तो मुसलमान हैं, लेकिन उन्होंने घरों में मूर्तियां रखी हुई हैं और हिंदुओं की सारी रस्में पूरी करते हैं।" (तक़रीर सियालकोट)